ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 27 अक्टूबर 2019

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 27 अक्टूबर 2019 से 02 नवम्बर 2019

आश्विन कृ. – 14 ● वि० सं०–2076 ● वर्ष 61, अंक 43, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 195 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,120 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा हिमाचल प्रदेश ने डी.ए.वी. न्यू शिमला में मनाया आनन्द पर्व

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, हिमाचल प्रदेश के आशीर्वाद से महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती जयंती 'आनन्द पर्व' का आयोजन डी.ए.वी. न्यू शिमला में 14 से 16 अक्टूबर, 2019 को किया। इस आयोजन की प्रेरणा आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी पद्म श्री अलंकृत प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली की रही।

महात्मा आनन्द स्वामी जी के आनन्द पर्व पर प्रचवनों पर आधारित किताबों की प्रदर्शनी लगाई गई तथा तीन दिवसीय कला कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें हिमाचल प्रदेश के समस्त डी.ए.वी. विद्यालयों के कला अध्यापकों ने भाग लिया।

इस सुअवसर पर 15 अक्टूबर, 2019 को भजन संध्या का आयोजन बड़े हर्षोल्लास से किया गया। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि हिमाचल प्रदेश की प्रधान तथा निदेशिका श्रीमती जे. काकरिया जी ने उपस्थित जनसमूह को आनन्द पर्व के अवसर पर बधाई दी और आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी पद्म श्री अलंकृत प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के संदेश को सभी आर्यजनों तक सभी आर्यजनों तक पहुँचाया। इसके साथ–साथ उन्होंने महात्मा जी की जीवनी व शिक्षाओं से अवगत करवाया तथा दैनिक जीवन में उनके द्वारा बताए मार्ग पर चलने का आह्वान किया।

महात्मा चैतन्य स्वामी जी के आशीर्वचनों ने सबका मार्गदर्शन किया तथा उन्होंने आनन्द स्वामी द्वारा दी गई शिक्षाओं के माध्यम से श्रोताओं को जीवन में होने वाली विभिन्न समस्याओं का निवारण करने के लिए गायत्री मंत्र एवं यज्ञ को उपयोगी बताया।

सह मंत्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा दिल्ली श्री सतपाल आर्य जी ने बताया कि महात्मा जी का व्यक्तित्व अद्वितीय है। जन्म से ही वे शांत चित्त थे, उनके मुखमंडल पर सदैव एक दिव्य मुस्कान रहती थी इसलिए पिता ने नाम खुशहाल चंद रखा।

हिमाचल प्रदेश के डी.ए.वी. विद्यालयों से आए प्राचार्यों, अध्यापक गण व अभिभावकों ने आनन्द पर्व पर भजनों का भरपूर आनन्द लिया। महात्मा आनन्द स्वामी जी की जीवन गाथा की नृत्य नाटिका के रूप में डी.ए.वी. छात्र–छात्राओं द्वारा प्रस्तुति की गई। जिससे महात्मा जी की शिक्षाओं पर चलने की सभी आर्योजनों को प्रेरणा मिली।

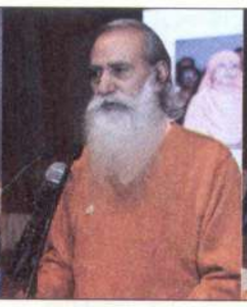

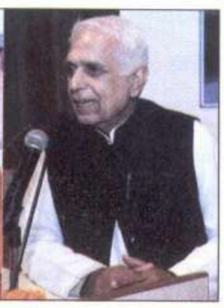

महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में 'अग्निना अग्नि समिध्यते (ऋ.1/12/6) ज्योति से ज्योति दीप्त होती है, दीप से दीप जलाओ एक अन्धकार पराभूत हो जायेगा', यह शिक्षा दी। आइए! हम दीप से दीप जलाते हुए, दीपमाला बन ज्योतित हों और इस समाज को भी ज्योतित करें।

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ – सम्पादक

हंसराज महिला महाविद्यालय जालंधर में मासिक यज्ञ का आयोजन

हंसराज महिला महाविद्यालय में होने वाले यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें नॉन टीचिंग स्टॉफ के सभी सदस्यों ने भाग लिया।

इस अवसर पर महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. अजय सरीन विशेष रूप से उपस्थित रहीं। यज्ञ सम्पादन में जिन कर्मचारियों का जन्मदिवस इस माह में है उनसे विशेष आहुतियाँ दिलावाई गईं।

इस अवसर पर प्राचार्या जी ने स्नेह को परिभाषित करते हुए अपने आप से, अपने परिवार से, अपने मित्रों से स्नेह की बात करते हुए कहा कि हमें उतना ही स्नेह अपने कार्य एवं कार्यस्थल से भी रखना चाहिए जितना स्नेह हम अपने आप या अपने परिवार से रखते हैं।

प्राचार्या डॉ. सरीन ने पूर्व डायरैक्टर कॉलेजिज़ डॉ. सतीश कुमार तथा उनकी माता जी के उत्तम स्वास्थ्य की कामना करते हुए उनके सुखद भविष्य की प्रार्थना की। प्राचार्या डॉ. श्रीमती अजय सरीन ने डायरेक्टर हायर राज्यकेशन का पदभार संभालने वाले आदरणीय श्री गौड़ जी के लिए भी शुभकामनाएँ प्रदान की और परमात्मा से प्रार्थना की कि उनके मार्गदर्शन में डी.ए.वी. परिवार खूब उन्नति करे।

यज्ञ के अंत में विचार श्रृंखला के अंतर्गत सुप्रिटेंडेंट अकांउट्स श्री पंजक ज्योति ने अपना सुविचार प्रस्तुत किया कि प्रत्येक बदलाव आरम्भ में कठिन ही लगता है लेकिन अंत में वह सुखद प्रतीति देने लगता है। हमें सकारात्मक रूप से प्रत्येक बदलाव को अपने जीवन में लाना चाहिए। इस अवसर पर संस्कृत विभागाध्यक्षा श्रीमती सुनीता धवन, डॉ. मीनू तलवाड़ सहित अन्य स्टॉफ भी उपस्थित था।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 27 अक्टूबर 2019 से 02 नवम्बर 2019

सर्वाङ्ग-सुन्दर बनें

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

सं वर्चसा पयसा सं तनूभिः, अगन्महि मनसा सं शिवेन।
त्वष्टा सुदत्रो विदधातु रायो, अनु मार्ष्टु तन्वो यद् विलिष्टम्।।

यजु. २.२४

ऋषिः **वामदेवः**। देवता **त्वष्टा**। छन्दः **त्रिष्टुप्।**

● [हम] **(वर्चसा)** ब्रह्मवर्चस से [और], **(पयसा)** दूध से, माधुर्य से, **(सम् अगन्महि)** संयुक्त हों, **(तनूभिः)** शरीरों से, **(सम्)** संयुक्त हों, **(शिवेन मनसा)** शिव मन से, **(सम्)** संयुक्त हों।, **(सुदत्रः)** शुभ दानी, **(त्वष्टा)** जगद्–रचयिता परमेश्वर, **(रायः)** [धन, चक्रवर्ती राज्य, सुख, आरोग्य आदि] ऐश्वर्यों को, **(वि–दधातु)** प्रदान करे, [और], **(यत्)** जो, **(तन्वः)** शरीर का, **(विलिष्टं)** त्रुटिपूर्ण अंग है, उसे, **(अनु मार्ष्टु)** परिमार्जित करे।

● हम चाहते हैं कि हम संसार में सर्वांग–सुन्दर बनकर रहें, षोडशकल चन्द्र के समान परिपूर्ण बनकर निवास करें। हमारे अन्दर ब्रह्मवर्चस हो, आत्मिक तेज हो, जिसके सम्बन्ध में कभी ऋषि विश्वामित्र ने कहा था कि ब्रह्म–तेज ही सच्चा बल है, अन्य बल उसके सम्मुख निःसार है। वह ब्रह्म–तेज का ही बल है, जिसके द्वारा शरीर से दुर्बल होते हुए भी अनेक मानव कोटि–कोटि जनों को अपने चरणों में झुकाते रहे हैं। साथ ही हमें 'पयः' भी प्राप्त हो। 'पयस्' शब्द दूध का वाचक होता हुआ भी रस, माधुर्य, शान्ति, निर्मलता, निश्छलता, सात्त्विकता आदि का भी द्योतक है। हमें पीने के लिए गो–रस और हृदय में बसाने के लिए उक्त माधुर्य आदि गुण प्राप्त हों। हम शरीरों से भी पुष्ट हों। हृदय में बसाने के लिए उक्त माधुर्य आदि गुण प्राप्त हों। हम शरीरों से भी पुष्ट हों। हमारे अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय तथा आनन्दमय रूपवाले पंच शरीरों का समुचित विकास हो। हमारा मन भी शिव हो, क्योंकि जब तक मन अशिवसंकल्पों से युक्त रहेगा, तब तक हमें किसी भी क्षेत्र में उत्कर्ष प्राप्त होना सम्भव नहीं है। मन को साधकर ही मनुष्य उन्नति की ओर अग्रसर होता है, और मन की जीत पर ही उसकी जीत निर्भर है, मन के हारने पर उसका हारना अवश्यम्भावी है।

'त्वष्टा' परमेश्वर सारे जगत् का तरखान है, शिल्पी है, जिसका हस्त–कौशल सम्पूर्ण विश्व में प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर हो रहा है। वह **'सुदत्र'** है, निरंतर सबको शुभ वस्तुओं का दान करता रहता है। वह हमें भी शुभ ऐश्वर्यों का–धन, चक्रवर्ती राज्य, सुख, आरोग्य आदि का दान करे। वह हमें भौतिक एवं आध्यात्मिक समस्त शुभ सम्पत्तियों का अधीश्वर बनादे। हमारे शरीर का कोई अंग यदि सदोष या त्रुटिपूर्ण हो गया है, तो वह कुशल शिल्पी उसे परिमार्जित, सुसंस्कृत एवं परिशुद्ध कर दे। यदि हमारे नेत्रों की दृष्टि–शक्ति मन्द हो गई है अथवा दृष्टि–शक्ति मन्द हो गई है अथवा दृष्टि–शक्ति तीव्र होते हुए भी हम उसका उपयोग अभय दृश्यों को देखने में करते हैं, तो त्वष्टा प्रभु हमारी मन्द या अपवित्र नेत्र–शक्ति को शुद्ध कर दें। इसी प्रकार श्रोत्र, मुख, नासिका आदि अन्य अंगों को भी मांजकर तीव्र–शक्तिमय एवं पवित्र कर दे। हे कलाकार त्वष्टा प्रभु! तुम हमारी तूलिका से रंग भरकर हमें सर्वांग–सुन्दर, सर्व–गुण–सम्पन्न और सर्व–शक्ति–समन्वित कर दो।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

हरिद्वार का प्रसाद

● महात्मा आनन्द स्वामी

पिछले अंक में महात्मा आनन्द स्वामी जी ने कहा कि देश तथा संसार में अशान्ति का राज्य है। संसारी लोग जिस मार्ग पर अग्रसर है वह सर्वनाश की ओर ले जाने वाला है। ऐसे में मन को वश में रखना बहुत ज़रूरी है। एक कहानी के माध्यम से स्वामी जी ने दुःखी जनता को सुखी बनाने के लिए 'चार सकारों' की बात कही। संध्या और स्वाध्याय नाम से पहले दो सकारों की विशद चर्चा की। आइए शेष दो सकारों की बात सुनें।

अब आगे ...

तीसरा 'स'

तीसरा 'स' सत्संग की ओर संकेत करता है। सत्संग एक ऐसी ज्ञान–गंगा है जहाँ पापी भी पार उतर जाते हैं क्योंकि सत्संग किसी पाप को रहने ही नहीं देता।

एक भक्त ऊपर बैठा था, नीचे से सन्तरे बेचने वाले ने आवाज़ दी 'ले लो अच्छे सन्तरे'। भक्त पुकार उठा, तू ठीक कहता है, अच्छे के संग से ही तरा जा सकता है, लोहा नाव के संग तर जाता है। पापी भी महात्माओं की संगति से अपने पाप धो लेते हैं। जैसे लोगों के पास आप बैठेंगे वैसे ही आप भी बनते जायेंगे –

संगति से गुण ऊपजे, संगति से गुण जाय।
जल–बिन्दु मुकता बने, जहर होत अहि खाय।।

जल की बिन्दु तो एक ही है परन्तु सीप में गई तो मोती का रूप धारण कर लिया और सांप ने पिया तो हलाहत विष बन गया। अतएव नीच की संगति कदापि न करनी चाहिए। सर्वदा अच्छे, नेक और पुण्यात्मा लोगों के पास बैठना। जहाँ हवन, यज्ञ, प्रभु–कीर्तन, समाज–सुधार, देशोद्धार की बातें हों वहाँ सौ काम छोड़ कर भी पहुँच जाना। सत्संगति की महिमा गायन करते हुए कवि ने ठीक ही कहा है–

तात, स्वर्ग–अपवर्ग सुख, धरिय तुला इक अंग।
तुले न ताही सकल मिलि, जो सुख लव सत्संग।।

भक्तवद्भक्तों का संग निःसन्देह मनुष्य को कुन्दन बना देता है। यदि सत्संग में जाते–जाते बहुत दिन हो गये हैं और जीवन में पवित्रता नहीं आई तो घबराइये नहीं, अत्यन्त मैले वस्त्र को बहुत बार भट्टी पर चढ़ाना पड़ता है तभी वह निर्मल हो सकता है।

चौथा 'स'

चौथे 'स' का प्रयोजन है सेवा। पहले जो तीन स कहे हैं। इनको प्रयोग में लाने से मनुष्य में लौकिक तथा अलौकिक शक्ति आने लगती है। यदि इस शक्ति को दुखियों की सेवा में लगाया जाय तो कुछ अभिमान तथा अहंकार का रोग उत्पन्न हो जाता है और **जब अभिमान आ जाये तो समझो कि सारा किया–कराया निष्फल हो गया। जैसे वृद्धावस्था रूप का, आशा धैर्य का, मृत्यु प्राणों का, क्रोध प्रेम का हरण कर लेता है, इसी प्रकार अभिमान सर्व गुणों तथा बलिदानों को हर लेता है। इस अभिमान से मन को बचाये रहने और नम्रता, माधुर्य तथा आनन्द को बढ़ाने के लिए सेवा एक अचूक साधन है।** सन्ध्या, स्वाध्याय और सत्संग से यदि हृदय विशाल नहीं हुआ तो फिर इनका क्या लाभ, और जो विशाल हृदय हो गया तो वह फिर स्वयं नहीं खाता, दूसरों को खिला कर प्रसन्न होता है, और यदि विशाल हृदय बनने से एक डिग्री नीचे रहा तो उदार हृदय तो अवश्य बन जाता है और उदार हृदय वह है जो स्वयं भी खाता है और दूसरों को भी खिलाता है।

देखते नहीं हो अपने देश में और दूसरे देशों में भी कितना हाहाकार मचा हुआ है? है कोई सुखी दिखलाई देता? किसी का भी हृदय टटोल देखो, सब दुःख के सागर में बहे चले जा रहे हैं, कितना चीत्कार है। भूख ने, प्यास ने, कष्टों ने, चिन्ताओं ने, मूर्खता, अज्ञान, लोभ, व्यभिचार, अनाचार ने कितनी आग भड़का रखी है! इसको शान्त करने के लिए तन, मन, धन से यत्न करो। यदि पल्ले कुछ भी नहीं तो दो मीठे वचन बोल कर ही किसी दुखिया को सन्तोष दे दो। जब आप किसी प्यासे को पानी, भूखे को भोजन देते हैं तो क्या आपके मन में प्रसन्नता नहीं होती और जब संसार के दुखियों के दुःख को देखते हैं तो क्या मन में करुणा का संचार नहीं होता? अतएव सेवा का कोई अवसर हाथ से नहीं जाने दो। मुझे आर्यसमाज का यह कार्य बहुत भला प्रतीत होता कि उसने ईश्वर–भक्ति के साथ दुखियों, पीड़ितों की सहायता, विधवाओं, अनाथों की रक्षा और अज्ञानियों को ज्ञान देने का कार्य जारी किया और उसको इस कार्य में संलग्न देखकर दूसरों ने भी उसका अनुकरण किया।

इस समय देश को ऐसे सेवकों की आवश्यकता है जो अन्न, दूध, घी, वस्त्र इत्यादि की कमी को पूरा करें। गौओं की वृद्धि और रक्षा के बिना यह उद्देश्य पूर्ण नहीं हो सकता। हर प्रान्त, हर जिले में आदर्श गोशालाएँ, पंचायती ढंग से स्थापित करो, जहाँ से जनता को शुद्ध दूध, घी सस्ता

शेष पृष्ठ 03 पर ☞

ऋषि दयानन्द का स्वराज्य चिन्तन

● डॉ. भवानीलाल भारतीय (स्मृति शेष)

स्मृति शेष डॉ. भवानी लाल भारतीय स्वामी दयानन्द के अनन्य अनुयायी थे। उनकी लेखनी से स्वामी दयानन्द के दर्शन पर उच्च स्तरीय साहित्य का सृजन हुआ। हर दिवाली से पहले उनका एक लेख आ जाया करता था। दयानन्द के स्वराज्य चिंतन पर पूर्व प्रकाशित उनका एक लेख पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे है – सम्पादक

भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन में पूर्ण स्वराज्य को अपना लक्ष्य बनाने का विचार 1929 में उस समय आया जब इण्डियन नेशनल कांग्रेस ने अपने लाहौर अधिवेशन में पूर्ण स्वराज्य प्राप्ति को भारतवासियों का लक्ष्य घोषित किया। उससे पहले लोकमान्य तिलक ने स्वराज्य को भारतवासियों का जन्मसिद्ध अधिकार बताया था और उसे प्राप्त करने के लिए अन्तिम क्षण तक प्रयत्न करने की प्रतिज्ञा की थी। परन्तु भारतीय नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती ने 1875 में (कांग्रेस की स्थापना के दस वर्ष पूर्व) स्वराज्य की महिमा का उल्लेख करते हुए अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखा–"**चाहे कोई कितना ही करे किन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। किन्तु विदेशियों का राज्य चाहे माता–पिता के समान सुखदायक, न्याययुक्त तथा मतमतान्तर के आग्रह से शून्य भी क्यों न हो, कदापि स्वीकार करने के योग्य नहीं होता।**" दयानन्द के इस वाक्य में भारत की शासक महारानी विक्टोरिया के उस आश्वासन (1858 में सिपाही विद्रोह समाप्ति पर राजकीय घोषणापत्र के रूप में) का प्रत्यक्ष प्रत्याख्यान दिखाई देता है, जिसमें ब्रिटिश रानी ने भारतवासियों के दमनरूपी घावों पर मरहम लगाने जैसे वाक्यों का प्रयोग कर कहा था कि भविष्य के शासन में न तो भारतवासियों से न्यायालयों में भेदभाव किया जायेगा और न धर्म के आधार पर किसी प्रकार का पक्षपात किया जायेगा। साथ ही स्वयं एक स्त्री और माता होने के कारण रानी विक्टोरिया भारतवासियों के प्रति पुत्रवत्सला माता की भांति प्रेम दिखलाने की भी प्रतिज्ञा करती है। वह स्वयं माता तथा दादी, नानी थी।

स्वामी दयानन्द भारत को स्वतंत्र और स्वाधीन देखने के लिए कितने उत्सुक थे यह उनके एक ग्रन्थ 'आर्याभिविनय' में किये गये ईश्वर की प्रार्थनापरक वेदमंत्रों के अर्थों से भी स्पष्ट होता है जहाँ उन्होंने सर्वशक्तिमान् परमात्मा को **'महाराजाधिराज'** कह कर सम्बोधित किया तथा उनसे स्वदेश को स्वाधीनता दिलाने में सहायक होने की प्रार्थना की। 'हम सदा स्वतंत्र रहें और हम कभी पराधीन न हों' इस प्रकार के क्रान्तिकारी विचार व्यक्त करना दयानन्द जैसे स्वाधीनचेता व्यक्ति के लिए ही सम्भव थे जबकि 19वीं शताब्दी के अन्य महापुरुष अंग्रेज़ों के सुराज्य (स्वराज्य नहीं) की प्रशंसा कर रहे थे और उस राज्य के चिरंजीवी होने की प्रार्थना करते थे। साहित्य या काव्य में जिस प्रकार व्यंग्यार्थ को महत्त्व दिया गया है, इसी व्यंग्यार्थपूर्ण शैली का प्रयोग करते हुए स्वामी दयानन्द ने संस्कृत संवादों की पुस्तक 'संस्कृत वाक्य प्रबोध' में निम्न प्रकरण लिखा। यह उन दिनों की बात है जब अफगानों और ब्रिटिश सत्ता में युद्ध छिड़ा था। सैनिक शक्ति में कमज़ोर होने पर भी अफगान सेनाएँ जी जान से लड़ रही थीं और अंग्रेज़ सेनाएँ आक्रमण का प्रतिकार कर रही थीं। इस संदर्भ में 'संस्कृत वाक्य प्रबोध' के निम्न संवाद को देखें–

"**प्रश्नकर्ता** – क्या कारण है कि ताकत में कम होने पर भी अफगान लोग शत्रु से भिड़ रहे हैं और स्वदेश रक्षा में जी जान की ताकत लगा रहे हैं?

उत्तर–अरे भाई, यह तो पक्षियों का भी स्वभाव होता है कि यदि कोई उनके आशियाने (घोंसला) पर दुर्भावना से हमला करता है जो वे उसका प्रतिकार अपनी चोंच या पंजों से भी करते हैं।"

इस वाक्य के द्वारा स्वामी दयानन्द देशवासियों को प्रेरित करते हैं कि यदि पक्षीगण अपने घर को बचाने के लिए जान की बाजी लगा सकते हैं तो प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ मनुष्य या हम भारतवासी अपने देश की स्वाधीनता के लिए प्राणपण से तत्पर क्यों नहीं हो सकते?

दयानन्द ने निर्भीकता से स्वराज्य का शंखनाद किया। अपने धर्मप्रचार हेतु किये गये व्यापक देशभ्रमण के दौरान जब कभी अवसर आता दयानन्द स्वराज्य की महिमा बताने तथा उसके लिए प्रयत्नशील होने के लिए लोगों को प्रेरणा देते। उत्तरप्रदेश में वे एक स्थान पर जब स्वराज्य के महत्त्व और पराधीनता के अभिशापों का वर्णन कर रहे थे, तो उनकी सभा में भारत के तत्कालीन प्रधान सेनापति जनरल रावर्ट्स आये और हैट उतार कर वक्ता के प्रति सम्मान व्यक्त किया। व्याख्यान के समाप्त होने पर वक्ता (दयानन्द) के प्रति कहा "**आपकी निर्भीकता और स्वदेशप्रेम धन्य है। सर्वोच्च सेनापति के सामने भी आप देशवासियों को स्वराज्य के लिए उत्साहित करते हैं, यह आपके व्यक्तित्व की विशेषता है।**" पंजाब के एक नगर में उन्होंने ब्रिटिश अफसरों को सावधान करते हुए कहा–"**जिस प्रकार आलस्य और प्रमाद के कारण हम आर्यो (भारतवासियों) को पराजित होना पड़ा, उसी प्रकार यदि शासक वर्ग का व्यवहार रहा तो उन्हें अपना राज्य गंवाना पड़ सकता है।**" दयानन्द की इसी राष्ट्रीय विचारधारा को लक्ष्य में रखकर श्रीमती ऐनी बेसेन्ट ने कहा था–"दयानन्द प्रथम व्यक्ति था जिसने भारत भारतीयों के लिए (India for Indians) का नारा लगाया।

महात्मा गाँधी ने 1942 में भारत छोड़ो (Quit India) का नारा हमें दिया था किन्तु दयानन्द ने तो उससे भी पहले पटना के एक अंग्रेज़ व्यवसायी मि. जोन्स से वार्तालाप के प्रसंग में कहा–"यदि मेरे कहे अनुसार भारतवासी स्वराज्य साधना करें तो आप लोगों (अंग्रेज़ों को) यहाँ से अपना बिस्तर गोल करना पड़ेगा।" दयानन्द की यह भविष्यवाणी निधन के चौंसठ वर्ष बाद 1947 में सार्थक हुई।

3/5, शंकर कॉलोनी, श्रीगंगानगर

☞ पृष्ठ 02 का शेष

हरिद्वार का प्रसाद

मिल सके और कृषि के लिए अच्छे बैल मिल सकें। अब देश में लोकतन्त्र राज्य है, हमारी अपनी सरकार है, वह तो इस सेवा में लगी ही है, परन्तु जब तक जनता स्वयं देश की त्रुटियों को पूरा नहीं करती तब तक अकेली सरकार भी सफल नहीं हो सकती। अतएव सब मिल कर गो–वृद्धि के यत्न में तत्पर हो जाओ। इस समय जो सज्जन इस सेवा को करेंगे, वे अक्षय पुण्य के भागी होंगे। दूसरी बड़ी सेवा यह है कि अपठित लोगों को हिन्दी पढ़ाओ। दिन को, रात्रि को, प्रातः सायं जब भी समय मिले, ग्राम–ग्राम में जाकर हिन्दी का प्रचार करो ताकि अगले हरिद्वार पर भारत देश में कोई बाल, वृद्ध, युवा, युवती ऐसा न हो जो हिन्दी पढ़ लिख न सके। इसी प्रकार घर से बेघर हुई पीड़ित जनता की हर प्रकार से सेवा करो। पीड़ितों को भी चाहिए कि वे निराशा छोड़कर राष्ट्रनिर्माण में सहायता दें। एक और अत्यन्त आवश्यक सेवा यह है कि देशवासियों को शराब, भङ्ग, तम्बाकू इत्यादि नाश करने वाले नशों से बचाया जाये ताकि बुद्धि की रक्षा हो सके और धन बच सके।

जनता में यह भाव भी पैदा करना चाहिए कि हाथ से काम करने का स्वभाव हो जाय, कोई न कोई हुनर सीख कर देश का धन बढ़ाना चाहिए।

अब आप समझे, मैंने जो चार 'स' कहे थे उनका कितना बड़ा महत्त्व है? और क्या यही प्रसाद सर्वोत्तम नहीं है?

यह कहकर महात्मा मौन हो गए और श्रोतागण एक साथ पुकार उठे–सर्वोत्तम, सर्वोत्तम।

तो भैया, मैंने तो यही प्रसाद हरिद्वार के मेले से ले जाने का निश्चय कर लिया है।

निस्सन्देह, यदि ऐसा प्रसाद ये लाखों लोग, जो हरिद्वार में पधारते हैं, साथ ले जायें, तो फिर भंवर में पड़ी देश और संसार की नैया शीघ्र पार पहुँच जाये।

आइए प्यारे प्रभु से कल्याण की प्रार्थना करें

ओम् पवमानः सो अद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः।
यः पोता स पुनातु नः।। (ऋ. 6/67/22)

ओ३म् प्रभु पवमान है, पवित्र करने वाला है, वह आज अपनी पवित्रता की शक्ति से हमें पवित्र करे।

ओम् एतो न्विन्द्रं स्तवाम शुद्धं साम्ना।
शुद्धैरुक्थैर्वा वृध्वांसं शुद्ध आशीर्वान्ममत्तु।।

(ऋ. 8/15/7)

आओ भक्तो! हम शुद्ध–हृदय होकर, पवित्र साम के गीतों से, और पवित्र ऋग्वेद के भजनों से शक्तिमान् प्रभु की स्तुति करें, जो पवित्र है और सबसे बढ़ा हुआ है, वह पवित्र हमारी पवित्र आशाओं का मालिक सदा हमको आशीर्वाद देता रहे!

ओम् त्वं हि न पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ।
अधा ते सुम्नमीमहे।।

(ऋ. 8/98/11)

सहस्त्रों शक्तियों तथा कर्मों वाले दयालु! तू हमारा पिता है, तू हमारी माता है, इसी कारण हम तुझ से कल्याण की याचना करते हैं। **इति**

अन्धविश्वासों को छोड़िए : वैज्ञानिक-तार्किक जीवनशैली अपनाइए

● डॉ. संजय तेवतिया

अन्धविश्वास एक ऐसा विश्वास है, जिसका कोई उचित कारण नहीं होता है। एक छोटा बच्चा अपने घर, परिवार एवं समाज में जिन परम्पराओं, मान्यताओं को बचपन से देखता एवं सुनता आ रहा होता है, वह भी उन्हीं का अक्षरशः पालन करने लगता है। यह अन्धविश्वास उनके मन-मस्तिष्क में इतना गहरा असर छोड़ देता है कि जीवनभर वह इन अन्धविश्वासों से बाहर नहीं आ पाता। अन्धविश्वास अधिकतर कमज़ोर व्यक्तित्व, कमज़ोर मनोविज्ञान एवं कमज़ोर मानसिकता के लोगों में देखने को मिलता है। जीवन में असफल रहे लोग अधिकतर अन्धविश्वास में विश्वास रखने लगते हैं एवं ऐसा मानते हैं कि इन अन्धविश्वास को मानने एवं इन पर चलने से ही शायद वह सफल हो जाएँ। अन्धविश्वास न केवल अशिक्षित एवं निम्न आय वर्ग के लोगों में देखने को मिलता है, बल्कि यह काफी शिक्षित, विद्वान, बौद्धिक, उच्च आय वर्ग एवं विकसित देशों के लोगों में भी कम या ज्यादा देखने को मिलता है। यह आमतौर पर पीढ़ी दर पीढ़ी देखने को मिलते हैं। अन्धविश्वास समाज, देश, क्षेत्र, जाति एव धर्म के हिसाब से अलग-अलग तरह के होते हैं। विभिन्न प्रकार के अन्धविश्वास आमतौर पर समाज में देखने को मिलता है, जैसे आँख का फड़कना, घर से बाहर किसी काम से जाते समय किसी व्यक्ति द्वारा छींक देना, बिल्ली का रास्ता काट जाना, 13 तारीख को पड़ने वाला शुक्रवार या 13 नवम्बर को अशुभ मानना, हथेली पर खुजली होना, काली बिल्ली में भूत-प्रेत का वास होना, परीक्षा देने जाने से पहले सफेद वस्तु जैसे दही आदि का सेवन करना, सीधे हाथ पर नीलकंठ नामक चिड़िया का दिखाई देना, सीढ़ी के नीचे से निकलना, मुँह देखने वाले शीशे का टूटना, घोड़े की नाल का मिलना, घर के अन्दर छतरी खोलना, लकड़ी पर दो बार खटखटाना, कन्धे के पीछे नमक फेंकना, मासिक धर्म के दौरान महिला को अपवित्र मानकर उसके मन्दिर में प्रवेश को वर्जित करना, श्राद्ध के दिनों में नया काम शुरू न करना या नए कपड़े न सिलवाना आदि।

अन्धविश्वास सच्चाई और वास्तविकता से बहुत दूर होते हैं। अन्धविश्वास में व्यक्ति अलौकिक शक्तियों के अस्तित्व में विश्वास रखता है, जो प्रकृति के नियमों की पुष्टि नहीं करता है और न ही ब्रह्माण्ड की वैज्ञानिक समझ रखता है। अन्धविश्वास व्यापक रूप से फैला हुआ है। अलौकिक प्रभाव में तर्कहीन विश्वास होता है।

आँख के फड़कने के बारे में लोगों में यह अन्धविश्वास है कि पुरुष की सीधी आँख एवं महिला की उल्टी आँख का फड़कना शुभ होता है। वहीं इसका उल्टा होना अशुभ माना जाता है। चिकित्सा विज्ञान के अनुसार, इसे मसल फ्लीकरिंग कहते हैं, इसका कोई कारण अभी तक पता नहीं है एवं न ही इसका कोई उपचार है। आँख का फड़कना स्वतः ही बन्द हो जाता है। घर से बाहर किसी कार्य के लिए जाते समय, किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा छींक देना भी एक अन्धविश्वास है। ऐसा होने पर व्यक्ति वहीं कुछ समय के लिए रुक जाता है एवं घर पर पानी पीकर या कुछ छोटा, मोटा खाकर ही दोबारा निकलता है। बिल्ली का रास्ता काट जाना भी अशुभ माना जाता है। देखा गया है कि अगर बिल्ली किसी रास्ते को पार कर जाती हैं, तब दोनों तरफ के लोग रुककर खड़े हो जाते हैं एवं तब तक खड़े रहते हैं, जब तक कि कोई व्यक्ति या कोई वाहन उस रास्ते को पार न कर जाए। इस कारण कई बार सड़कों पर जाम तक लग जाता है। ऐसा कहा जाता है कि बिल्ली, शेर के परिवार से सम्बन्धित होती है। शेर, चीता एवं इस परिवार के जानवर जब कोई सड़क या रास्ता पार करते हैं, तब रास्ता पार करने के बाद रुककर, पीछे मुड़कर अपने शिकार की तरफ देखते हैं। इसी कारण पुराने समय में लोग जब तक शेर चला नहीं जाता था, तब तक उस रास्ते पर आगे नहीं बढ़ते थे। कारण तो ये था, लेकिन अब यह अन्धविश्वास बन गया है। तेरह नंबर या तेरह तारीख को अशुभ माना जाता है एवं अगर तेरह तारीख, शुक्रवार के दिन पड़ती है, तो इसे अत्यंत अशुभ माना जाता है। देखा गया है कि होटल्स में तेरह नंबर का कमरा या तेरहवाँ तल भी नहीं होता है, वहाँ पर बारह के बाद सीधे चौदहवाँ नंबर होता है। यह भी एक प्रकार का अन्धविश्वास है। हाथ की हथेली पर खुजली होना भी अन्धविश्वास से जुड़ा है, जिसके अनुसार पुरुष की सीधी हथेली पर एवं महिला की उल्टी हथेली पर खुजली होने से धन की प्राप्ति होती है, जबकि इसका उल्टा होने पर आर्थिक हानि सम्भव है। हमारे समाज में ऐसा माना जाता है कि बिल्ली में भूत का वास होता है। इसी कारण से लोग काली बिल्ली को अपने घर में नहीं घुसने देते। वहीं समाज के कुछ हिस्सों मे काली बिल्ली को भाग्यशाली भी माना जाता है। इस कारण से लोग काली बिल्ली को घरों मे पालते हैं। लेकिन काली बिल्ली में न भूत का वास होता है और न ही काली बिल्ली अच्छे भाग्य का कारण होती है। यह मात्र एक अन्धविश्वास एवं कपोल कल्पित घटनाओं पर आधारित है। बच्चों के परीक्षा देने जाने से पहले माता-पिता सफेद वस्तु जैसे दही आदि खिलाकर भेजते हैं। यह इस अन्धविश्वास से जुड़ा होता है कि सफेद वस्तु खाकर जाने से परीक्षा बहुत अच्छी होती है एवं नंबर बहुत अच्छे आते हैं। अगर आप कहीं जा रहे हैं एवं रास्ते में नीलकंठ नामक चिड़िया सीधे हाथ की तरफ दिखाई पड़ती है, तो यह अत्यन्त शुभ का द्योतक है। इसके पीछे कहानी यह जुड़ी हुई है कि हम जो भी बात नीलकंठ नामक चिड़िया से कहेंगे, वह बात सीधे भगवान् शिव तक पहुँचा देगी एवं हमारी मनोकामना पूरी होगी।

खड़ी हुई सीढ़ी के नीचे से निकलने को लोग दुर्भाग्य से जोड़ते हैं, जबकि यह केवल एक अन्धविश्वास मात्र ही है। मुँह देखने वाले शीशे का टूटना भी अशुभ माना जाता है एवं इसे घर में रखना भी अशुभ होता है। ऐसा अन्धविश्वास हमारे समाज में काफी प्रचलित है। घोड़े की नाल (घोड़े के पैरों के नीचे लगे लोहे) का मिलना शुभ माना जाता है एवं लोग इस नाल से गोल छल्ला बनवाकर सीधे हाथ के बीच की उँगली में पहनते हैं। एक अन्धविश्वास के अनुसार, घर के अन्दर छाते को खोलना अशुभ माना जाता है। लकड़ी पर चाहे वह लकड़ी का दरवाज़ा हो या कोई अन्य वस्तु, दो बार खटखटाना भी शुभ नहीं माना जाता है। यह भी एक प्रकार का अन्धविश्वास ही है। जब कोई व्यक्ति अच्छे से तैयार होता है एवं किसी को वह बहुत अच्छा, सुन्दर लगता है, तब वह लकड़ी की किसी वस्तु को छूकर टचवुड बोलता है, ताकि उस व्यक्ति को नज़र न लगे, जबकि इसमें अन्धविश्वास के अलावा कोई सच्चाई नहीं होती है। हमारे समाज में दुर्भाग्य को दूर करने के लिए व्यक्ति के कन्धे के पीछे लोग नमक भी फेंकते हैं, जिससे कि उस व्यक्ति का भाग्य जागृत हो जाए, यह कार्य भी अन्धविश्वास की श्रेणी में आता है। जब कोई व्यक्ति छींकता है, तब हम कहते हैं कि भगवान् भला करें या छत्रपति जय नंदी माई। हमारे पूर्वज बताते हैं कि ऐसा इसलिए कहा जाता है कि कहीं छींकने के समय पर शैतान हमारी आत्मा को न ले जाए। यह भी एक प्रकार का अन्धविश्वास ही है।

हालांकि, आजकल ज्योतिष को विज्ञान ही कहते हैं, (गणित ज्योतिष विज्ञान है फलित ज्योतिष नहीं-सम्पादक) लेकिन अधिकतर ज्योतिषियों द्वारा बताई गई बात या की गई भविष्यवाणी झूठी ही निकलती है। भूत-प्रेत में विश्वास रखना एक बहुत बड़ा अन्धविश्वास है। आमतौर पर जो लोग भूत से मिलने या भूत के दिखने की बात करते हैं, वे सिर्फ कहानियाँ गढ़ते हैं या फिर किसी मानसिक रोग से पीड़ित होते हैं, जिससे अज़ीबोगरीब चीजें दिखने लगती है या अज़ीबोगरीब आवाज सुनाई देने लगती है, जबकि वास्तव में ऐसा नहीं होता। चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में इसे 'हैलुसिनेशन' कहते हैं। मासिक धर्म के समय लड़कियों एवं महिलाओं का मंदिर में प्रवेश वर्जित एवं पूजा करना तथा भगवान् की मूर्ति के सामने दीपक, धूपबत्ती या अगरबत्ती जलाना मना होता है, क्योंकि यह माना जाता है कि मासिक धर्म के दौरान महिला अपवित्र हो जाती है, जबकि यह अन्धविश्वास के अलावा कुछ नहीं है, क्योंकि मासिक धर्म एक सामान्य शारीरिक प्रक्रिया है जैसे साँस लेना, दिल का धड़कना, भोजन करना, शौच जाना आदि। ऐसा कहा जाता है कि श्राद्ध के दिनों में नए काम की शुरुआत नहीं करते, नया सामान नहीं खरीदते हैं, नए कपड़े नहीं सिलवाते हैं। श्राद्ध के दिनों में हम अपने पितरों को याद करते हैं, उनकी पूजा करते हैं। हमारे परमपूज्य पितृगण हमें इन कार्यों को करने से नहीं रोकते हैं। अतः यह भी एक अन्धविश्वास है। हमारे समाज में बहुत सारे लोग मंगलवार के दिन बाल नहीं कटवाते हैं एवं न ही दाढ़ी बनाते या बनवाते हैं। मंगलवार को भगवान हनुमान जी का दिन माना जाता है। भगवान् हनुमान के शरीर पर बाल अधिकता में पाए जाते हैं। इसी कारण लोग मंगलवार के दिन बाल कटवाने एवं दाढ़ी बनाने से बचते हैं, जबकि यह सही नहीं है। यह एक अंधविश्वास मात्र ही है। अन्धविश्वास से बचने के लिए आवश्यकता है अपने मन, मस्तिष्क, सोच एवं मनोविज्ञान को मज़बूत करने की।

अक्सर लोग, अन्धविश्वासी, सुनी-सुनाई बातों के आधार पर होते हैं। कभी बिल्ली के रास्ता काटने पर उस रास्ते से बाहर जाकर देखिए, आप पर किसी तरह का कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसी प्रकार अन्य अन्धविश्वासों पर भी प्रयोग करके देखिए, आप अपने आप इन अन्धविश्वासों से बाहर निकल आएँगे। अगर आपके साथ इन अन्धविश्वासों पर प्रयोग करते समय कोई अनहोनी होती है, तो यह महज एक संयोग ही होगा। इसमें कोई सच्चाई नहीं होगी। अगर आपसे कोई कहता है कि इन अन्धविश्वासों में सच्चाई है, तब आप उससे कहिए कि वह अन्धविश्वासों की सच्चाई को साबित करके दिखाए। अपने अन्धविश्वास से सम्बन्धित विश्वास को छुड़ाना बहुत ही मुश्किल होता है, यह एक कड़वी सच्चाई है। अन्धविश्वास से बचने के लिए हमेशा सकारात्मक बने रहें। मानव मस्तिष्क, विश्वास एवं घटना के बीच बहुत जल्दी सम्बन्ध बना लेता है। अगर कोई व्यक्ति तेरह तारीख के दिन शुक्रवार को खतरनाक मानता है एवं उसी दिन उसके साथ कोई अनहोनी हो जाती है, तब अन्धविश्वास मजबूती के साथ और प्रबल हो जाता है। ऐसा ही अन्य अन्धविश्वासों के साथ भी होता है, जबकि यह मात्र एक संयोग ही है।

'वैदिक पथ' से साभार

महर्षि–निर्वाण–प्रभा

● **देव नारायण भारद्वाज**

दीप जलाते आये देकर दीवाली चले गये।

सृष्टि के अरबाधिक वर्षों में एक वर्ष सं. 1881 वि. पौषमास के एक शनिवार को करोड़ों परिवारों में से एक परिवार कर्षन जी तिवारी का और भारत के लाखों ग्रामों में से एक ग्राम टंकारा –जहाँ एक शिशु ने जन्म लिया। माता–पिता, चाचा सम्बन्धी सबके हृदय में हर्ष का दीपक जल गया–वह उनका कुल दीपक जो था। जातकर्म संस्कार तथा अन्य उपयुक्त स्वागत की गतिविधियों में ग्राम, सुख से आच्छादित हो गया। समारोह के साथ ग्यारहवें दिन उसका नामकरण संस्कार हुआ। नाम रखा गया मूलशंकर। माता–पिता परिजन उसके मुख को देखकर अपने मन में रोज नये दीपक जलाते रहे–जिनमें उनकी आशाओं–कल्पनाओं का तेल वर्तिका जलते थे, कि मेरा मूल शंकर बड़ा होकर विद्वान और श्री मान बनेगा। आठवें वर्ष में फिर एक नये उत्साह का तेल लेकर दीपक ज्योतित हो गया–मूल शंकर में, जब उसका उपनयन संस्कार हुआ। गायत्री, शिव साहित्य और यजुर्वेद मूलशंकर को कण्ठस्थ कराया गया। पिता शैव मतानुयाई थे–वे पुत्र को भी परम शिव भक्त बनाना चाहते थे। इसीलिए कथा वार्ता आदि धार्मिक अनुष्ठानों में मूलशंकर को लगाये रखते थे।

मूलशंकर की 14 वर्ष की आयु में एक दीपक और जल गया। ग्राम के शिव मन्दिर में शिव रात्रि के व्रत को धारण कर शिव के दर्शन की लालसा में वे रात्रि भर जगते रहे और कभी मन्दिर के दीपक की लौ को देखते, कभी शिव पिण्डी को देखते रहे। पिता आदि व्रतधारी सभी सो गये थे। अकेला मूलशंकर उस जलते दीपक की लौ को अपने हृदय में समेटता रहा और उसी रात्रि में मूषकों की क्रीड़ाओं ने उसे बता दिया था कि यह पत्थर शिव नहीं है–वह तो कोई और है। व्रत–पर्व का दिन तो बीत गया पर इस शिव–रात्रि का दीपक जलता ही रहा। दो वर्ष बाद परिवार की एक किरण बुझी–क्योंकि मूलशंकर की सहोदरा बहन की मृत्यु हो गई थी। मूल शंकर रोया नहीं। उसके दीपक में एक नया तेल पड़ गया था। भले ही परिवार के लोग उसे न रोने के कारण निष्ठुर समझते रहे–किंतु अपनी प्यारी बहन को खो कर मन ही मन वह इस मृत्यु से पहचान कर रहा था। तीन वर्ष और बीते कि आदरणीय और स्नेही लाड़ दुलार करने वाले चाचा जी की भी मृत्यु हो गई। आज मूल शंकर फूट–फूट कर रो पड़ा। दीपक को आज एक नई वर्तिका मिल गई यह मृत्यु क्या सबको *निगल जायेगी? इस पर विजय प्राप्त करनी है।*

सम्पन्न परिवार का 20 वर्ष का नवयुवक कुमार जिसे युवराज की भाँति परिजन देखते थे, और उसे देखकर अपने सुखों के दीपक अपने मनों में जला रहे थे–पर वह मूलशंकर सांसारिक सुखों को छोड़कर वैरागी बनना चाहता था। उसके हृदय का दीपक एक परिवार को ही नहीं सम्पूर्ण संसार को उजाला देना चाहता था–सच्चे शिव का और मृत्यु से अभय का। उच्च संस्कृत शिक्षा व धार्मिक शिक्षा के लिए आग्रह के बाद भी वह काशी न जा सके, किन्तु पड़ोसी किन्हीं विद्वान से शिक्षा लेने का अवसर उन्हें अवश्य मिल गया। शिक्षक ने मूलशंकर के वैराग्य भाव को पिता से प्रकट कर दिया। फलस्वरूप विवाह की तैयारी की गई। ग्राम परिवार अपने मन में सुस्वादु भोज व गायन–वादन के सुख का दीप जला रहे थे, किन्तु मूलशंकर के मन का दीपक हवा के झकोरे खा रहा था। मूलशंकर ने गृह त्याग कर दिया। खोज की गई एक बार पकड़ में भी आ गये मूलशंकर किन्तु दुबारा जाने पर, फिर लौट कर नहीं आये।

साधु मण्डली ने मूलशंकर सम्पन्न परिवार का बेटा–स्वर्णभूषण व रेशमी वस्त्रों से सज्जित को देखा। कई साधुओं के मन में कई प्रकार के प्रलोभन जाग गये। कुछ ने उसकी स्वर्ण मुद्राएँ, कुछ ने रेशमी वस्त्र उससे उपालम्भ दे कर माँग लिए। सभी कुछ देकर उसके दीपक में अवत्याग का तेल पड़ चुका था। आगे चलकर कुछ अच्छे योगी मिले, जिन्होंने मूलशंकर को एक नया नाम दे दिया–ब्रह्मचारी शुद्ध चैतन्य। दीपक की लौ दिन–प्रतिदिन बढ़ने लगी तभी तो कोट कांगड़ा में वैरागियों के बीच में एक युवती को देख–कर वह युवती भी कैसी ब्रह्मचारी शुद्ध चैतन्य से ही परिहास करने लगी। नया अनुभव था ब्रह्मचारी सावधान हो गया। ऐसे ढोंगियों से उसने अपने दीपक को बचा लिया। शुद्ध चैतन्य ने नर्मदा तट पर स्वामी पूर्णानन्द से संन्यास की दीक्षा ले ली और वह बन गया–दयानन्द सरस्वती।

योगानुष्ठान और प्रभु मिलन के उसके परीक्षण चलते रहे। यह दयानन्द का दीपक अब लौ को लिए कहाँ नहीं भटका, उसमें प्रभु की ज्योति मिलाने के लिए। वह ज्योति उसे मिली 36 वर्ष की वय में एक प्रज्ञाचक्षु महात्मा विरजानन्द जी से, जब उस नेत्रहीन कृशकाय महात्मा को दयानन्द के रूप में दृष्टि मिली। उनके मन का बुझा हुआ दीपक जल उठा। इधर गुरु के ज्ञान से दयानन्द का दीपक भी प्रदीप्त हो उठा। शिक्षा पूर्ण होने पर गुरुदक्षिणा में भेंट की गई थाल से भरी लौंगें गुरु ने ग्रहण करने में कोई रुचि न दिखाकर दयानन्द से वह दीपक ही माँग लिया जिसकी ज्योति अब उजाला के साथ–साथ ज्वाला भी बन चुकी थी। अपने लिए नहीं संसार के कल्याण के लिए वेदों के प्रकाश के लिए। प्रभु इच्छा–गुरु इच्छा और वेद इच्छा की पूर्ति हेतु, दयानन्द निकल पड़े–उसने अपने दीपक को कभी दीप ही रहने दिया–कभी उसे दिनकर बना लिया। तभी तो वह कुटी से ले कर कोठी तक प्रकाश कर सका।

सरिता तट पर ब्रह्मवेला के झुटपुटे अँधेरे में निर्धन माँ द्वारा अपने पुत्र के शव का विर्सजन किए जाने पर दयानन्द की आँखें खुल जाती हैं। माँ के पास एक ही धोती उसके दो टुकड़े एक से अपना तन ढका दूसरे से अपने हृदय के टुकड़े पुत्र का बदन ढका–वह टुकड़ा भी, शव विसर्जन के बाद, खींच लिया, दोनों टुकड़ों को जोड़ कर अपनी लाज बचाने के लिए।

उस दिन दयानन्द का दीपक चीत्कार कर उठा। उसके दीपक में इस असहाय मानवता के कल्याण का तेल पहुँच चुका था। उसने देश की पराधीनता को समझा, जाति–पाति, ऊँच–नीच, छूआ–छूत, बाल विवाह, विधवा संत्रास, नारी दुर्दशा, मूर्ति पूजा, आडम्बर, अन्धविश्वास, धार्मिक धोखाधड़ी, अशिक्षा–अर्थात् अज्ञान, अन्याय और अभाव उसने सभी कुछ समझा और इन सबके हटाने के लिए वह कृत संकल्प हो गया। उसने ब्राह्मणों को उनका ब्रह्मवर्चस्व याद दिलाया, साथ ही उनके द्वारा फैलाए ढोंग का तिरस्कार भी किया। उसने दीन–दलित, दुखियों को गले लगाया, उनको ढाड़स बंधाया, उनको ऊँचा उठने की राह बताई। साधारण ही नहीं पाखण्डियों के गढ़–किले हटाये। शास्त्रार्थ किए, व्याख्यान दिये, वेदभाष्य और सत्यार्थ प्रकाश जैसे ग्रन्थ लिखे और अन्धकार को हर यत्न से हटा दिया। दीपक अपना काम करता रहा।

दम्भी स्वार्थी सशक्त शत्रुओं ने दयानन्द के दीप को जितना बुझाना चाहा उतना ही वह प्रचण्ड होता चला गया, वह तो जगत् कल्याण के लिए सभी कुछ कर रहा था, तो शत्रुओं ने दयानन्द पर कीचड़ उछाला, दोष लगाये, शस्त्र चलाये, तलवार से प्रहार किये और एक नहीं सत्तरह बार विष दिया। दयानन्द का दीपक! उसे तो जलना ही जलना था, चाहे कोई उसे अमृत पिलाये या कालकूट। इन सभी विषमताओं से निष्प्रभावी इस दीपक की ज्योति भारतवर्ष क्या सम्पूर्ण विश्व में फैलने लगी। सभी भद्र विचारक दयानन्द से जुड़ना चाहते थे। थियोसोफिकल सोसाइटी दयानन्द के आर्य समाज का अंग बनने को आतुर थी। सभी दस नियम उसे मान्य थे, किन्तु एक बिन्दु–तीसरे नियम का **'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है'**–का सत्य शब्द हटाने भर से वे सभी आर्य समाज में आ जायेंगे। अमेरिका से उनके दो सर्वोच्च विद्वान दयानन्द से इस विषय पर समझौता करने आये। दयानन्द इस 'सत्य' को हटाने के लिए कदापि सहमत नहीं हुए। उनके दीपक में इस 'सत्य' की ही तो ज्योति थी।

दयानन्द ने देखा था कि साधारण–सम्पन्न जनता वर्ग आर्य समाज को अपनाता जा रहा है। यदि राजे रजवाड़े और उच्च शासक वर्ग भी आर्य समाज को अपना लें तो दीन–दुखियों –दलितों की रक्षा भी हो जाये और राजागण भी वेद शिक्षा प्राप्त कर लें। एक दिन इन दोनों की सम्मिलित शक्ति से देश फिर स्वतंत्र हो जाय और यहाँ पर वैदिक साम्राज्य या राम राज्य आ जाय। इसीलिए वे इन रजवाड़ों के निमन्त्रण पर उनके वहाँ अवश्य पहुँचे। उदयपुर नरेश, शाहपुराधीश ने भरपूर स्वागत किया दयानन्द का। उनके दीपक से अपनी ज्योति जलाई। आर्य समाज को अपनाया। राज महलों में यज्ञ शालाएँ बनाईं। दरबार में जन कल्याण के कार्य आरम्भ किए। रियासतों में वैदिक संस्कार के कार्य किए। अपनी दुष्प्रवृतियों पर अंकुश लगाया।

जोधपुर राजवर्ग का निमन्त्रण भी आ गया। दयानन्द ने वहाँ जाने का मन बनाया। लोगों ने बताया कि वहाँ के लोग अधिक व्यसनी और विपरीत गामी हैं और आप पाखण्ड को खण्ड–खण्ड करे बिना रहने वाले नहीं, सो आपको वहाँ पूर्ण सतर्कता रखनी पड़ेगी। यह सुनकर दयानन्द का दीपक देदीप्य हो उठा। वे बोल पड़े **'यदि दयानन्द की अँगुलियों को बत्ती बनाकर जला दिया जाये, तो भी दयानन्द सत्य का प्रचार बन्द नहीं कर सकता।'** उदयपुर नरेश और शाहपुराधीश राजाओं ने प्रचुर धनराशी एवं शाल–दुशाले भेंट कर बड़े सम्मान पूर्वक दयानन्द को विदा किया था।

राजा का निमन्त्रण आया है। दयानन्द को तो अपने सत्य–दीपक के साथ जोधपुर जाना ही है, चाहे मार्ग में आँधी आये, वर्षा हो या तूफान आये। वे वहाँ पहुँच ही गए। जोधपुर शासन में फैजुल्ला खाँ मान्य मंत्री के रूप में कार्यरत थे। इन्हीं की कोठी में दयानन्द को ठहराया गया। उनका सत्संग प्रवचन खूब ज़ोर–शोर से होने लगा। वैश्या नन्हीं भगतन राजा की प्रेमिका ही नहीं थी, उनके शासन शासन तंत्र में हस्तक्षेप भी करती थी। स्वामी जी ने राजवर्ग से बुराइयाँ छोड़कर सद्गुण धारण की अपेक्षा की। उन्होंने भारतीय राजाओं की वीरता का बखान किया, उनकी रानी, पत्नियों की धीरता का गुणगान भी किया, किन्तु व्याख्यान में वह यह भी कहने से नहीं चूके, **'राजा, सिंह होता है, उसका वैश्या कूकरी से मेल ठीक नहीं।'** स्वामी जी के सुधारवादी सदोपदेश भला किसे सुहाते। उनके विरुद्ध षड्यन्त्र पर षड्यन्त्र किये जाने लगे। उनकी कोठी में चोरी कराई गई और रसोइये सेवक द्वारा कालकूट दिलाया गया। भंयकर रूप से रुग्ण होने पर एक साधारण डॉ. अलीमर्दान खाँ से चिकित्सा कराई गई। लाभ न होने पर आबू गए, वहां से अजमेर लाये गए। योग्य डॉ. लक्ष्मण दास का उपचार भी विलम्ब की दशा में प्रभावी नहीं हुआ। 30 अक्टूबर 1883 ई. का दिन, अब तक अनेक स्थानों से देश के दूरस्थ निवासी भक्त भी स्वामी जी के दर्शनार्थ आ चुके थे। इनमें लाहौर से पहुँचे पं. गुरुदत्त विद्यार्थी भी, अत्यन्त उत्साही जिज्ञासु नवयुवक जो वैज्ञानिक विचार धारा में पगे थे किन्तु ऋषि भक्त आर्य समाज में अनुरक्त होते हुए भी नास्तिक थे।

आज अन्तिम दिन दयानन्द के दीपक में विशेष ओज तेज था, जो उनके अमृत्यु दृश्य से सीधे गुरुदत्त में चला गया। पुराने बड़े दीपक ने अपनी ज्योति नये नन्हे दीपक गुरुदत्त में बढ़ा दी थी। इस गुरुदत्त के दीपक से जल गए उसके साथी लाला लाजपतराय, महात्मा हंसराज के दीपक। दयानन्द तो अपने जीवन में जहाँ गये–हर ओर दीप जलाते चले गये। मुंशीराम स्वामी श्रद्धानन्द बरेली में देव दयानन्द से नव जीवन–ज्योति पाकर एक दीप से अंसख्य दीपक जलाने में व्यस्त हो गये। आर्य समाज रूपी विराट् दीप उदय होकर दीप–दीप से दीप जलाने लगा। जब धरा पर दिवाली की धूम मच रही थी, उसी सन्ध्या को–**'प्रभु! तेरी इच्छा पूर्ण हो, तैंने अच्छी लीला की'**–उद्घोष कर अन्तिम श्वाँस ली, और पूरे देश में दीवाली जल उठी। कितना कहें–पुरानी कहानी छोड़ें। इन्द्रप्रस्थ नई दिल्ली भारत की राजधानी, अक्टूबर 2018 में अन्तराष्ट्रीय महासम्मेलन के महाकुम्भ स्थल और दूरदर्शन प्रसारण के माध्यम से विश्व ब्रह्माण्ड ने देव दयानन्द की महानतम ज्योतिर्मयी दीवाली के दर्शन से स्वयं को धन्य–धन्य किया।

'वरेण्यम्' एम.आई.जी. 45 पी. रामघाट मार्ग, अलीगढ़ (उ.प्र.)

दीपावली–महर्षि दयानन्द और आर्य समाजी

● पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य

आर्यवर्त्त (भारत) पर्वों एवं त्यौहारों का देश है। भारत में समय–समय पर ऋतु अनुसार सैंकड़ों पर्व मनाए जाते हैं। इतने पर्व संसार के किसी भी देश में नहीं मनाए जाते। इन पर्वों को मनाने के पीछे भारी रहस्य छिपा हुआ है! इन पर्वों में श्रावणी उपाकर्म (सलोना) अर्थात् रक्षा बंधन, विजय दशमी, दीपावली, नवशस्येष्टि यज्ञ (होली) का विशेष महत्त्व है। ये पर्व आर्य पर्व हैं और ये आदिकाल से मनाए जाते हैं, आज हम केवल वैश्य पर्व दीपावली पर ही प्रकाश डालते हैं।

दीपावली का अर्थ हैं दीपों की माला अर्थात् दीपों की कतार। यह पर्व कार्तिक मास की अमावस्या को बड़ी धूम–धाम से सकल विश्व में मनाया जाता है। इस दिन आर्यजन जगह–जगह बड़े–बड़े यज्ञ (हवन) करते हैं तथा वैदिक विद्वानों द्वारा जन कल्याण के लिए भजन प्रवचन कराए जाते हैं। कुछ नादान व्यक्ति इस दिन जुआ खेलते हैं। चोरी करते हैं और मास–मदिरा का सेवन करते हैं जो वेद विरुद्ध अनैतिक कर्म हैं। हमें ऐसे समाज विरोधी तत्वों से सावधान रहते हुए समाज को बुराइयों से बचाना चाहिए।

दीपावली पर्व मनाने के पीछे व्यक्तियों के अलग–अलग विचार हैं। कुछ लोग कहते हैं कि विजय दशमी (दशहरा) के दिन वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र ने लंका के राजा राक्षस राज रावण को युद्ध क्षेत्र में मारा। वे दीपावली के दिन वापिस सीता तथा लक्ष्मण सहित अयोध्या लौटे थे एवं अयोध्या वासियों ने उनके वापिस आने की खुशी में घी के दीप जलाए थे तभी से यह महापर्व मनाया जाता है। वास्तव में यह विचार सच्चाई के विरुद्ध है क्योंकि श्री राम का वनवास गमन चैत्र मास में हुआ था तथा श्री राम ने वाल्मीकी रामायण के अनुसार रावण का वध चैत्र शुक्ल अमावस्या को किया था। सन्त तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में रावण का वध दिवस चैत्र शुक्ल चौदस लिखा है। इसलिए श्री राम का दीपावली के दिन अयोध्या लौटने का विचार निराधार है। दीपावली पर्व को तो श्री रामचन्द्र जी के पूर्वज महाराजा रघु तथा महाराजा दिलीप भी मनाते थे। कुछ व्यक्ति कहते हैं कि जैन मत के प्रवर्तक महावीर स्वामी का निधन दीपावली के दिन हुआ था, उनकी याद में यह पर्व मनाया जाता है। हमारे सिख भाई कहते है कि गुरु अर्जुन देव जी इस दिन मुगलों की जेल से छूट कर आए थे तथा इस खुशी में यह त्यौहार मनाया जाता है। कुछ व्यक्ति कहते हैं कि भगवान रामतीर्थ जी का दीपावली को स्वर्गवास हुआ था। उनकी याद में यह त्यौहार मनाया जाता है।

वेदों के प्रकांड विद्वान जगत् गुरु महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने संसार को वैदिक ज्ञान सिखाया था। योगी राज श्री कृष्ण चन्द्र महाराज के पश्चात् महर्षि दयानन्द जैसा त्यागी–तपस्वी, परोपकारी, ईश्वर भक्त, धर्मात्मा देशभक्त, वैदिक विद्वान संसार में दूसरा व्यक्ति कोई पैदा नहीं हुआ। महर्षि दयानन्द ने धर्म का सच्चा स्वरूप संसार के सामने रखा था। उन्होंने संसार को कर्म प्रधानता का पाठ पढ़ाकर जन्म–जाति, छुआ–छूत, ऊँच–नीच का भेद मिटाया था। नारियों और शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार दिलाया था। भारतवासियों को आजादी का पाठ सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द जी ने ही पढ़ाया था तथा 'गोकरुणा निधि' पुस्तक लिखकर गऊ को माता बताकर गौ सेवा करने की शिक्षा सारी दुनिया को दी थी।

महर्षि दयानन्द महाराज को वेद प्रचार का पवित्र कार्य करने में भारी कष्टों का सामना करना पड़ा था। वे भारत की दुर्दशा को देखकर रो पड़ते थे तथा रात को ठीक तरह से सोते भी नहीं थे। विरोधी दुष्ट लोगों ने उन पर गोबर, ईंटें फेंकी तथा सत्तरह बार हलाहल विष पिलाया फिर भी वे मुस्कुराते रहे, अंतिम बार तो अंग्रेज़ शासकों ने तथा पाखण्डी लोगों ने नन्हीं जान वेश्या से मिलकर उनके रसोइया जगन्नाथ को लालच देकर महर्षि दयानन्द को दूध में पिसा हुआ शीशा मिलाकर पिलवा दिया फिर भी वे घबराये नहीं तथा जगन्नाथ को बुलाकर कहा बेटे! मुझे केवल एक ही दुख है कि मैंने जो वेद प्रचार एवं विश्व जागृती का पावन कार्य प्रारम्भ किया था वह अधूरा रह गया। तूने लालच में आकर यह कार्य किया है लेकिन तुझे कुछ भी नहीं मिलेगा। मैं तुझे पाँच सौ रुपए दे रहा हूँ, तू यहाँ से दूर नेपाल देश में चला जा। तेरे प्राण बच जायेंगे। अन्यथा सबेरे पता चलने पर लोग तुझे जान से मार देंगे। ऐसे दयालु थे देव गुरु दयानन्द। संसार में ऐसा महान व्यक्ति कहीं भी नहीं मिलेगा।

आर्यो! महर्षि दयानन्द जी का हम पर भारी ऋण है जिसे हम सौ जन्मों में भी नहीं चुका सकते। सच्चाई तो यह है:–

सुनो आर्यो! भारत में यदि, देव दयानन्द न आते!

राम, कृष्ण के प्यारे वंशज, कहीं नहीं जग में पाते।।

वह वीर साहसी योगी था, जीवन में कभी न घबराया।

वह जग को अमृत पिला गया था मात यशोदा का जाया।।

आर्यो! महर्षि दयानन्द देव पुरुष युग नायक थे, तुम अपने सच्चे हित चिन्तक महान् गुरु को मत भूलो। गुरुदेव के उपकारों को याद करो और वेद प्रचार में पंडित लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज, लाला लाजपतराय, स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती बनकर कर्म क्षेत्र मे कूद पड़ो। जरा विचार करो महर्षि दयानन्द जी ने दीपावली के दिन हँसते हुए अपने प्राण धर्म रक्षा में त्यागे थे। स्वामी जी ने अकेले होते हुए कभी किसी से भय नहीं खाया था। वे लालच से कोसों दूर थे, ग़लत बातों से उन्होंने कभी समझौता नहीं किया था और तुम पदों–सम्पत्तियों के लालच में आपस में लड़ रहे हो। याद रखो यह धन दौलत तुम्हारे साथ नहीं जाएगी। अगर अपना भला चाहते हो तो मेरी बात ध्यान से सुन लो :–

जो मानव संसार में, करते उल्टे काम।
मिट जाते हैं एक दिन, हो कर वे बदनाम।।
जगत्पिता जगदीश को रखो हमेशा याद।
मानव तन अनमोल है, करो न तुम बर्बाद।।
सत्य सादगी धार लो, करो भलाई मीत।
धर्मवीर बन विश्व को, लोगे निश्चित जीत।।
नारायण स्वामी बनो, करो वेदप्रचार।
'नन्दलाल' होगी सुनो, जीवन नवका पार।।

आर्य सदन बहीन जनपद,
पलवल (हरियाणा)
चल भाष : क्रमांक :–9813845774

न्याय दर्शन का महत्त्व

● स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

संसार में प्रत्येक मनुष्य को सुख–दु:ख का अनुभव होता रहता है। सब इसी के लिए प्रयत्न करते हैं कि वे दु:ख को छोड़कर सुख प्राप्त करेंगे। परन्तु सुख–प्राप्ति की इच्छा और दु:ख से घृणा होने पर भी न तो प्रत्येक को सुख ही मिलता है और न ही दु:ख से मुक्ति मिलती है। इस अद्भुत दशा को देखकर अर्थात् सुख के प्राप्त करने और दु:ख से बचने का उद्योग करते हुए भी यह असफलता क्यों हुई? जब इसके कारणों पर विचार किया जाता है, तो पता लगता है कि मनुष्य की सारी शक्ति परिमित है, अतः उसका ज्ञान भी परिमित है। जिस वस्तु का सम्बन्ध होता है, वह इन्द्रियों या मन द्वारा होता है, और बहुत सी वस्तु ऐसी हैं जो इन साधनों से ज्ञात नहीं होती। उनके ज्ञात होने का साधन बुद्धि है। यदि इन तीनों साधनों (मन, बुद्धि, इन्द्रिय) में से किसी एक में विकार या अन्तर आ जाए तो ज्ञान में भी अवश्य विकार या अन्तर आ जाएगा। जब ज्ञान में विकार हुआ तो उसका उपयोग ठीक नहीं होगा। उपयोग के ठीक न होने से उसका परिणाम या फल भी अवश्य उल्टा होगा। इससे यह सिद्ध हुआ कि प्रत्येक कार्य के फल को यथार्थ रूप से प्राप्त करने के लिए ज्ञान का यथार्थ होना आवश्यक है।

जहाँ किसी वस्तु का ज्ञान विपरीत होगा वहाँ उसका फल भी विपरीत होगा। अतः मनुष्य का परम कर्तव्य है कि वह प्रत्येक वस्तु को उपयोग में लाने से पूर्व उसका यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने के साधन को प्राप्त करे, क्योंकि जिस सर्राफ ने सोने की परीक्षा के लिए कसौटी नहीं ली है, वह सोने की यथार्थ परीक्षा करने में असमर्थ है। ऐसा सर्राफ अपने व्यापार में लाभ नहीं उठा सकता और न वह सर्राफ कहलाने का अधिकारी है। 'मनुष्य' शब्द का अर्थ भी यही है कि उसमें विचार हो और जिसका उद्देश्य अपने जीवन में विचारानुसार संसार के बाजार में वस्तुओं का खरीदना है। उनमें से जो वस्तु बिना विचारे खरीदी जाती है, उनसे हानि भी बहुत होती है। पर जो वस्तु विचार कर खरीदी जाती है, उसमें हानि की बहुत कम सम्भावना है। इसी प्रकार जो मनुष्य अपने आत्मिक कर्तव्यों को पूरा करने के लिए बिना विचारे काम करेगा तो अवश्य वह दु:ख का अनुभव करेगा और यदि वह भले प्रकार अन्वेषण करके कार्य करेगा तो अवश्य ही मुक्ति प्राप्त होगी। यथार्थ तत्त्वज्ञान की प्राप्ति के साधनों में न्याय शास्त्र सब से श्रेष्ठ और आवश्यक है। जो मनुष्य न्याय दर्शन को नहीं जानता वह किसी वस्तु का यथार्थ ज्ञान नहीं प्राप्त कर सकता।

जो मनुष्य न्याय शास्त्र को ठीक प्रकार से जान लेता है, उसको कोई चालाक धोखा नहीं दे सकता। सांप्रदायिक तथा वैज्ञानिक विवादों में जो बातें साधारण की दृष्टि में कठिन मालूम होती हों, वह इस दर्शन के ज्ञाता को अति सुगम हैं और जिन प्रश्नों का उत्तर देने में संसार के बड़े–बड़े मत चकराते हैं, उसका उत्तर इस विज्ञान के ज्ञाता बड़ी सुगमता से दे सकता है। सम्प्रति आत्मिक सिद्धान्तों के ज्ञानाभाव से मनुष्यों में अनेक प्रकार के झगड़े हो रहे हैं और इस दर्शन के न जानने से वे झगड़े समय–समय पर विकट रूप धारण कर लेते हैं। अतः हमारा निश्चय हो गया है कि यथाशक्ति पुराने ऋषियों के विचारों को भाषा में अनुवाद करके देशवासियों को यथार्थ साधनों का ज्ञान कराने का उद्योग करेंगे। इन दर्शनों का अनुवाद क्रमशः न्याय दर्शन से प्रारम्भ होकर आपकी दृष्टि में आता रहेगा। यदि एक व्यक्ति को भी इसके अध्ययन से पूरा लाभ हुआ तो अनुवादक अपना परिश्रम सफल समझेगा।

स्रोत : 'न्याय दर्शन' की भूमिका, 1956 ई., प्रस्तुति : भावेश मेरजा

उपनिषदों में पर्यावरण-चेतना

● डॉ. नवलता

वेद यदि अनन्त ज्ञानराशि हैं, तो उपनिषद् उनका सार है, वेदान्त है। वेद-ब्रह्म की प्रतिष्ठा करने वाली उपनिषदें ब्रह्मविद्या, ब्रह्मविज्ञान का कोश है, जिनकी सीमा **'अणोरणीयान्'** से **'महतो महीयान्'** तक है। दूसरे शब्दों में परमाणु से भूमा तक परस्पर अन्तःसम्बन्ध की व्याख्या तथा तात्विक रूप से एकत्व प्रतिपादन सभी उपनिषदों का मूलाधार है। भौतिक सृष्टि से लेकर आध्यात्मिक संकल्पना तक, वैज्ञानिक तथा क्रमिक विकासात्मक स्वरूप का विलक्षण विधि से विश्लेषण उपनिषदों की विशिष्ट उपदेश शैली है।

उपनिषदों में पर्यावरण-चेतना के संदर्भ में आधुनिक पर्यावरणविदों की अवधारणा का उल्लेख किया जाए तो 'पर्यावरण' भूमण्डलीय जीवन को प्रभावित करने वाली भौतिक (जैव तथा अजैव) परिस्थितियों का समुच्चय है, जिसके अन्तर्गत जल, वायु, तेज (अग्नि) मृदा (पृथ्वी) आदि कारकों की गणना की जाती है। इस दृष्टि से पर्यावरण को प्रभावित करने वाले तत्त्वों की पहचान, उनके परिणाम तथा गुणवत्ता का निर्णय तथा उक्त घटकों के मध्य उपेक्षित सन्तुलन हेतु मानवीय प्रयासों का मूल्यांकन 'पर्यावरण-चेतना' के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

इस परिप्रेक्ष्य में यदि उपनिषदों का विश्लेषण किया जाए, तो कुछ बिन्दुओं पर विचार करना आवश्यक हो जाता है-

1. पर्यावरण की सीमा कहाँ तक है?
2. क्या पारिस्थितिकी तक ही मानव से पर्यावरण का सम्बन्ध है?
3. पर्यावरण संतुलन का तात्पर्य क्या है?
4. पर्यावरण-संरक्षण हेतु मानव का क्या कर्तव्य है?
5. पर्यावरण-चेतना का मूल-स्रोत क्या है?

इन प्रश्नों के समाधान हेतु सृष्टि तथा मानव जाति के इतिहास का मूलान्वेषण किये बिना समुचित उत्तर नहीं दिया जा सकता। परब्रह्म की सिसृक्षा के परिणामस्वरूप आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी; पुनः पंचीकृत पाँचों महाभूतों से हिरण्यगर्भ और उसके विस्फोट से द्युलोक, अंतरिक्ष, पृथ्वी तथा पाताल लोकों की उत्पत्ति हुई। इस सृष्टि में कोई ऐसा पदार्थ नहीं है, जो पूर्ण रूप से आवरणयुक्त या पूर्णरूप से आवरणरहित हो। प्रत्येक पदार्थ किसी से आवृत है तथा किसी का आवरण है। केवल परमाणु किसी का आवरण नहीं है तथा ब्रह्मरूप निरवयव निरवच्छिन्न चैतन्य किसी से आवृत नहीं है। इस प्रकार परमाणु से पारिमण्डल्य तक पर्यावरण (परित आवृणोतीति) की सीमा है। सूक्ष्म-सूक्ष्म पर स्थूल-स्थूल का आवरण है। व्याप्य पर व्यापक का आवरण है। अधिभूत पर अधिदेव का आवरण है, अधिदेव पर अध्यात्म का आवरण है। जड़ पर चेतन तथा चेतन पर जड़ का आवरण है। कथन का तात्पर्य यह है कि कोई भी पदार्थ आवरण रहित न तो ज्ञान का विषय बन सकता है और न अभिमान का। व्यवहार जगत् आवरण के अधीन है। इस दृष्टि से प्रत्येक पदार्थ का अस्तित्व तथा स्थायित्व पर्यावरण के कारण है।

कुछ और गूढ़ता से विचार करें, तो नित्य का आवरण अनित्य है तथा अनित्य का आवरण नित्य। जब व्यवहार की चर्चा की जाती है तो व्यवहारगत वैशिष्ट्य से चैतन्य का आवरण अविद्या, अज्ञान या माया है, जीव का आवरण पुरुष है, पुरुष का आवरण शरीर, शरीर का आवरण पृथिवी, पृथिवी का आवरण जल, जल का आवरण अग्नि, अग्नि का आवरण वायु, वायु का आवरण आकाश तथा आकाश का आवरण भूमा है। तन्मात्रों का आवरण महाभूत है। इस आवरण परंपरा को ही पर्यावरण कहा जा सकता है, जिसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि एक के अस्तित्व की कल्पना दूसरे की अपेक्षा किये बिना नहीं की जा सकती। अन्योऽन्यसापेक्षता की सिद्धि ही पर्यावरण-संतुलन का अपर पर्याय है। इस दृष्टि से पर्यावरण की परिधि में व्यक्त तथा अव्यक्त, भूत तथा भव्य सब कुछ समाहित हो जाता है। पर्यावरणगत संबंध के कारण की एक ही पदार्थ में जड़त्व तथा चेतनत्व, गति तथा स्थिति सम्भव हो पाते हैं। अन्यथा जगत् गतिशील न होता तथा चेतन नित्य न होता। इस अर्थ में गति 'क्षरत्व' है, जिसके केन्द्र में 'स्थिति' 'अक्षर' भाव से शाश्वत विद्यमान है। अक्षर अव्यक्त रहता है तथा क्षर दृश्यमान होता है, प्रकाशित होता है। उपनिषद् उस अक्षर को ही 'सत्य' स्वीकार करते हुए, उसे आच्छादित करने वाले सुवर्ण के समान (हिरण्यमय) आवरण का उल्लेख करती है।

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।

यह 'पिधान' रूप पर्यावरणीय तत्त्व ही जन सामान्य की चेतना का केन्द्र है। वह अमन्त नामों से ज्ञेय है। छान्दोग्य उसी को **'वाचारम्भणं विकारो नामधेयम्'** कह कर सिद्ध करता है। जीव, जो ब्रह्म की उपाधि है, पंचकोशों रूप आवरण में रहकर समस्त लौक व्यवहार करता है। वे पञ्चकोश आनन्द, विज्ञान, प्राण, मन तथा अन्न, वस्तुतः आध्यात्मिक, आधिदैविक तथा आधिभौतिक स्तर पर पर्यावरण के स्वरूप का बोध कराते हैं। समस्त जीवलोक इस पर आश्रित है। वस्तुत, उपनिषद् अध्यात्म की व्याख्या शारीरिक तथा मानसिक घटकों के समुच्चय के रूप में करती हैं। अध्यात्म का संचालन आधिदैविक तथा आधिभौतिक शक्तियों द्वारा होता है।

आधिभौतिक पर्यावरण के अंतर्गत समस्त पाञ्चभौतिक जगत् आ जाता है, जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में जीवलोक को प्रभावित करता है। सूर्य, चन्द्र, वरुण, इन्द्र, मरुत्, अर्यमा, रुद्र, आदित्य आदि देवता आधिभौतिक घटनाओं के रूप में पर्यावरण का निर्माण करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप अमृतवत् ऊर्जा, प्राणवायु, अन्नोत्पादक पर्जन्य, जल आदि पोषक तत्त्वों की प्राप्ति होती है। इस दृष्टि से मानव का अपने समग्र पर्यावरण से अन्योऽन्यपोष्यपोषक भाव सम्बन्ध है, क्योंकि पर्यावरण से प्राप्त करने के लिए उसका संरक्षण, उसकी उपासना आवश्यक है। पृथिवी तथा आकाश के इस अन्तःसम्बन्ध को तैत्तिरीयोपनिषद्, भृगु वल्ली के नवम अनुवाक में स्पष्ट उल्लिखित किया गया है-

'पृथिव्यामाकाशः प्रतिष्ठितः आकाशे पृथिवी प्रतिष्ठिता।'

ईशावास्योपनिषद् में 'पूषा' से उन समस्त आवरणों को उद्घाटित कर सत्य के दर्शन की प्रार्थना की गई है। इसका तात्पर्य यही है कि मनुष्य को अपने पर्यावरण के स्वरूप को यथार्थतः जानने के प्रति सचेष्ट रहना चाहिए।

वर्तमान समय में पर्यावरण चेतना का केन्द्र स्थूल पदार्थ हैं। स्थायी तथा धर्मनिष्ठ पर्यावरण-चेतना के अभाव के कारण प्रदूषण तथा असंतुलन की चरम स्थिति में वायु शोधन, जलशोधन तथा भूरक्षण के तात्कालिक प्रयास किये जाते हैं, जो बढ़े हुए संक्रामक रोग की भाँति असाध्य तथा निष्फल प्राय होते हैं। इस संदर्भ में उपनिषद् शाश्वत तथा निरंतर विद्यमान चेतना के रूप में पर्यावरण के प्रति आत्मभाव की अवधारणा व्यक्त करती है। औपनिषद विचारधारा समग्रता की पोषिका है तथा एकांङ्गी अस्तित्व की कल्पना को निराधार मानती है। छान्दोग्योपनिषद् में ऋक् तथा सामोपासना के प्रसङ्ग में पृथिवी, अन्तरिक्ष, द्युलोक, नक्षत्रमण्डल की उद्‌गीथोपासना का उपदेश करते हुए शालावान् के पुत्र शिलक, चिकितायन के पुत्र दाल्भ्य तथा जीवल के पुत्र प्रवाहण ऋषियों के मध्य हुए संवाद का उल्लेख है, जिसमें स्वर, प्राण, अन्न, जल, स्वर्ग, मनुष्य लोक तथा आकाश के परस्पर आश्रयत्व को बतलाया गया है। इसी प्रकार सामोपासना के अन्तर्गत हिंकार, प्रस्ताव, उद्‌गीथ, प्रतिहार तथा निधन, इन पाँच विधियों की चर्चा की गई है, जिनसे वृष्टि, जल, ऋतु, पशु, प्राण, वाणी उपास्य हैं। यह उपासना पर्यावरण-चेतना का ही एक रूप है। क्योंकि 'साम' का अर्थ है शुभ या कल्याण।

सामोपासना के द्वारा नाम, वाक्, मन, सङ्कल्प, चित्त, ध्यान, बल, अन्न, विज्ञान, जल, तेज, आकाश, स्मरण, आशा, प्राण आदि के प्रति ब्रह्मभाव की अवधारणा को पोष्य माना है। 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' की अनुभूति स्वयं में समस्त जड़-चेतन पर्यावरण के प्रति आत्मवत् भावना को जाग्रत करती है।

तैत्तिरीयोपनिषद् ब्रह्म के स्वरूप की व्याख्या जन्म स्थिति लय के कारण के रूप में करती है-

यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते, येन जातानि जीवन्ति यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति तद् विजिज्ञास्व, तद् ब्रह्मेति। तैत्ति. 3.1

ब्रह्म की जिज्ञासा समग्र तथा अखण्ड पर्यावरण को जानने की इच्छा ही है। इस क्रम में 'समावर्तन' के समय अन्तेवासी को गुरु द्वारा यह उपदेश दिया जाना, कि-**'देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम्'** विचारणीय है। निश्चय ही पितृकार्य के रूप में विवाह करके गृहस्थ आश्रम के समस्त दायित्वों का निर्वाह है तो देवकार्य 'इष्टापूर्त' कर्म है। अग्निहोत्र, दर्शपौर्णमास, सोमयाग आदि के द्वारा पर्यावरण का संवर्धन गृहस्थ का कर्त्तव्य है तथा वापी कूप तडागादि जलाधार, देवायतनों का निर्माण तथा उनका संरक्षण, आरामादि का संवर्धन संरक्षणादि जल, वायु तथा ताप को शुद्ध और संतुलित रखने के क्षतिरहित उपाय हैं। अनेक उपनिषदों में विहित इन्द्र, वरुण, अर्यमा, द्यौः, अंतरिक्ष, पृथिवी, जल, ओषधि, वनस्पति किं बहुना?. 'सर्व' शांति की प्रार्थना का तत्त्वार्थ उक्त पर्यावरणीय संतुलन ही है।

ईशावास्योपनिषद् इसका सरल उपाय बतलाती है, जिसके तीन बिन्दु हैं-प्रथम, त्याग की भावना से भोग। द्वितीय, कर्मशील रहकर पूर्णायु होने की इच्छा तथा तृतीय, पूर्णता की दृष्टि तथा उसी के लिए यत्न। ईश्वर की अनन्त सृष्टि में अपना भाग मात्र प्राप्त करने की भावना तथा अर्जित किए गए भोग्य को समर्पित कर भोग करने की प्रवृति 'केवलादी' नहीं बनाती। इसी प्रकार पूर्णता की दृष्टि विषयों को परस्पर सम्बद्ध रूप में ग्रहण करने का विचार उत्पन्न करती है। 'पूर्ण' नित्य है, उसकी प्रतिष्ठा के लिए अनित्य की रक्षा आवश्यक है। यही 'योगक्षेम' है। अप्राप्त को प्राप्त करने हेतु यत्न तथा प्राप्त का संरक्षण ही योगक्षेम है। ब्रह्म भाव से सबकी उपासना 'क्षेम' की पराकाष्ठा है।

बृहदारण्यक उपनिषद् में इस तथ्य को अश्वमेध के उदाहरण द्वारा अत्यंत सुन्दर ढंग से स्पष्ट किया गया है। उसके अनुसार यज्ञ सम्बन्धी अश्व का शिर उषा (ब्राह्म मुहूर्त) है, खुला हुआ मुख वैश्वानर है, आत्मा संवत्सर है, पीठ द्युलोक है, उदर अंतरिक्ष है, चरण रखने का स्थान पृथिवी है, पार्श्वभाग दिशाएँ हैं, सन्धिस्थान मास तथा पर्व हैं। पाद दिन-रात हैं, अस्थियाँ नक्षत्र हैं, मांस आकाश है, अर्धजीर्ण अन्न सिकता है, नाड़ियाँ नदियाँ हैं, यकृत् तथा हृदय पर्वत है, रोम ओषधि वनस्पतियाँ हैं, नाभि का उर्ध्वभाग उदय होता हुआ सूर्य तथा नाभि से नीचे का भाग अस्त होता हुआ सूर्य है। विद्युत उसकी जृम्भ है तथा

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

महर्षि निर्वाणोत्सव

● भद्रेसन

भारत में तथा अन्यत्र भी भारतीयजन दीपमाला से पर्याप्त दिन पूर्व ही वर्षाजन्य सीलन, गन्दगी को दूर करने के लिए सफाई–अभियान चलाते हैं। तब लिपे–पुते भवनों पर कार्तिक अमावस्या की रात को दीपों की पंक्ति सजाई जाती हैं और तदनन्तर कुछ लक्ष्मी का पूजन करते हैं। प्रायः ऐसी मान्यता है, कि स्वच्छ, प्रकाश युक्त, गृह में ही लक्ष्मी का टिकाव होता है। अतः दीपमाला पवित्रता–प्रकाश–पूजन का प्रेरक पर्व होने से प्रत्येक प्रकार की सर्वविध गन्दगी को दूर कर यह पर्व जहाँ पवित्रता का प्रतीक है, वहीं जहाँ–कहीं, जैसा–कैसा, जब भी अन्धेरा हो उसको हटाने वाले प्रकाश का भी यह पर्व परिचायक भी है।

सामान्य रूप से जहाँ दीपावली पर सर्वत्र ऐसा ही प्रचलित है, वहाँ विशेष–विशेष संगठनों में कुछ विशेष रूप भी इसी पर्व पर आयोजित होते हैं। क्योंकि इसी दिन कुछ ऐसी घटनायें घटित हुईं, कि उन्होंने इस पर्व को और भी विशेष स्मरणीय बना दिया। तभी तो आर्यसमाज इस पर्व के प्रचलित रूप के साथ ऋषि निर्वाणोत्सव या महर्षि दयानन्द बलिदान दिवस भी आयोजित करता है।

इस अनोखेपन को देख कर स्वाभाविक रूप से एक प्रश्न उभरता है, कि इस अवसर पर यह भी क्यों किया जा रहा है? इसके उत्तर में यह सामने आता है, कि इतिहास से परिचित पाठक जानते हैं, कि दीपमाला वाले दिन ही 1883 को अजमेर में महर्षि दयानन्द ने जोधपुर में हुए षड्यन्त्र के कारण अपने प्राणों का स्वेच्छा से त्याग किया था। तो इस संक्षिप्त उत्तर से एकदम अनेक प्रश्न उभरते हैं, कि–निर्वाण और बलिदान शब्द का क्या अर्थ है? तथा महर्षि के देहान्त के लिए ये शब्द ही क्यों प्रयुक्त किए जाते हैं? संसार में हज़ारों जब मृत्यु का ग्रास बनते हैं, तब महर्षि के प्राण त्याग को षडयन्त्र क्यों कहा जा रहा है? उन दिनों ऐसी कौन सी परिस्थितियाँ थी, जिनके कारण यह मृत्यु सामान्य न होकर षड्यन्त्र सिद्ध होती है? महर्षि ने अपने जीवन में ऐसे कौन से कार्य किए, जिनके कारण उनकी मृत्यु को निर्वाण नाम दिया जा रहा है? तथा महर्षि के जीवन में उनको तिरोहित करने के लिए ऐसी कौन–कौन सी घटनायें घटीं, जिससे यह देहत्याग न होकर बलिदान हो गया?

निर्वाण शब्द के कोषों में अनेक अर्थ दिए गए हैं, जिनमें से मृत्यु और मुक्ति=परम आनन्द विशेष हैं। यह शब्द महापुरुषों के देहान्त के लिए विशेष रूप से प्रयुक्त किया जाता है, क्योंकि साधारण जन संसार में सामान्य रूप से जीवन बिता कर चले जाते हैं, पर महापुरुष कुछ विशेष कार्य कर जाते हैं। अतः उनके निधन के लिए सत्कारार्थ निर्वाण शब्द का प्रयोग किया जाता है। क्योंकि –

कोई हँस के जिया कोई रोके जिया।
मगर जिन्दगी पाई उसने जो कुछ हो के जिया।।
अपने लिए जिए तो क्या जिए।
जीना है उसी का जो औरों के लिए जिए।।

भारतीय परम्परा में मानव जीवन के चार उद्देश्य माने गए हैं। वे हैं–धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, इनको पुरुषार्थ चतुष्टय भी कहा जाता है। इन चारों में से मुक्ति, मोक्ष सर्वोत्कृष्ट है, अतः जिस मानव ने मोक्ष सिद्ध कर लिया, वस्तुतः उसी का जीवन पूर्ण, सफल है। कवि कालिदास ने अभिज्ञान शाकुन्तलम् (3) और मालविकाग्निमित्र (3,1) में **'अये! लब्धं नेत्रनिर्वाणम्'** शब्दों का प्रयोग किया है, जिससे प्रसंगानुरूप निर्वाण शब्द का अर्थ **'सफल'** झलकता है। अतः निर्वाण शब्द के प्रयोग का भाव है, कि अमुक्त महापुरुष ने अपनी साधना से अपने जीवन के लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर अपने आपे को सफल बना लिया है।

बलिदान जो महापुरुष सत्य पर, देश पर, धर्म पर तथा अपनी सत्यनिष्ठा पर अपने प्राण न्यौछावर कर देते हैं तथा सर्वस्व समर्पण करते देते हैं, उनका ऐसा निधन बलिदान कहलाता है। जिन महापुरुषों का निधन सामान्य ढंग से न होकर विशेष घटना के कारण किसी षड्यन्त्र से होता है, उसके लिए बलिदान शब्द का प्रयोग किया जाता है। बलि का देना बलिदान का प्राथमिक अर्थ है, इसका भाव है –भेंट चढ़ाना, समर्पित करना। बलि शब्द जहाँ अपने इष्टदेव के लिए भेंट चढ़ाये जाने वाले किसी पशु, पक्षी, प्राणी अन्य वस्तु के लिए प्रयुक्त होता है – जैसे कि बलि का बकरा, वहाँ विशेष या सामान्य के लिए आहुति रूप में दिए जाने वाले अन्न के लिए भी प्रचलित है (जैसे कि बलिवैश्व देवयज्ञ में)। हाँ, राजा को दिए जाने वाले कर के लिए भी बलि शब्द साहित्य में प्रयुक्त हुआ है। जैसे कि **प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत्।** रघुवंश (1,8)।

बलिदान शब्द का एक और तात्पर्य भी है, कि किसी विशेष उच्च लक्ष्य के लिए, दूसरों की भलाई के लिए शारीरिक, मानसिक आदि कष्ट को सहन करना और जीवन तक का दान कर देना, या लगाना। अतः अपनी भूख–प्यास, सर्दी–गर्मी, कीर्ति–अपकीर्ति की भी चिन्ता न करते हुए हर स्थिति में अपने उद्देश्य की सिद्धि में जुटे रहना भी बलिदान है। (तुलनीय–**तुभ्यं बलिहृतः स्याम** अथर्व. 12,1,62)। इसके लिए सबसे पहले यह आवश्यक हो जाता है, कि इस पथ का पथिक अपनी सुख–सुविधाओं का विचार न करते हुए अपने लक्ष्य पर चलता चले। तब धूम्रपान, मद्य, मांस, जुआ, व्यभिचार आदि व्यसनों से सर्वथा उसको दूर रहना होगा, क्योंकि इन व्यसनों में पड़ा हुआ अपने उद्देश्य को भूल जाता है। अतः बलि शब्द भेंट की वस्तु, कष्ट सहन का जहाँ वाचक है, वहाँ अपने आप, जीवन को उच्च लक्ष्य के साधने में लगा देना भी बलिदान ही है।

निर्वाण शब्द के अर्थ मोक्ष के अनुसार तथा उसकी प्राप्ति के साधन के रूप में शम, दम आदि षट्क सम्पत्ति का शास्त्रों में निर्देश प्राप्त होता है। महर्षि दयानन्द का जीवन इसका साक्षी है, कि ये गुण उनके जीवन में समाए हुए थे तथा उनका योग=समाधि पर विशेष अधिकार था। वेद प्रचार आदि अन्य कार्यों के साथ अन्त समय तक वे समाधि–साधना में निरत रहे। उन्होंने आजीवन कठोर ब्रह्मचर्यव्रत का पालन किया। किसी प्रकार की भी व्यक्तिगत वंशवृद्धि, शिष्य परम्परा, मठ स्थापना से महर्षि सर्वदा–सर्वथा निःसंग रहे। ऐसे निष्काम सेवी, ज्ञानप्रसारक समाधि साधक की मुक्ति में कैसे शक किया जा सकता है?

निर्वाण शब्द के सफलता अर्थ के अनुसार वेद–प्रचारक, एकेश्वरवाद के पोषक, समाज सुधारक के रूप में महर्षि की सफलता सर्वथा स्पष्ट है। क्योंकि महर्षि दयानन्द ने जिस समय कार्यक्षेत्र में पदार्पण किया उस समय सामान्य जनता की तो बात ही क्या? विशेष विद्वान् भी वेद के परिचय से दूर थे। काशी शास्त्रार्थ इस का स्पष्ट प्रमाण है। यह महर्षि के प्रभाव का ही परिणाम है, कि आज खुलेआम वेदमन्त्रों का पाठ होता है और अध्ययन–अध्यापन में सबके लिए वेद का द्वार खुला है।

महर्षि दयानन्द का जिस परिवार में जन्म हुआ, वह सामवेदीय औदीच्य ब्राह्मण परिवार था। भारतीय साहित्य के अनुसार वेदों का अध्ययन–अध्यापन ब्राह्मण का मुख्य धर्म है। शिव भक्त पिता ने अपने पुत्र को बाल्यावस्था में यजुर्वेद (का कुछ भाग) कण्ठस्थ कराया था।

महर्षि ने अपनी साधना की सिद्धि के लिए जो अध्ययन किया, उसमें वेद भी पढ़े थे। ब्रह्मर्षि गुरु विरजानन्द जी दण्डी ने विदा की बेला में महर्षि के जीवन का कांटा बदल कर उनको आर्षज्ञान की ज्योति जगमगाने का कार्य सौंपा। इस कार्य को करते हुए महर्षि अपने चिन्तन–मनन के परिणामस्वरूप इस परिणाम पर पहुँचे कि वेद जहाँ भारतीयों के साहित्य, धर्म के मूलस्रोत हैं, वहाँ यह सर्वसम्मत सिद्धान्त है, कि संसार के पुस्तकालय की वेद प्राचीनतम कृति हैं। इसके साथ वेद पूर्णतः ईश्वरीय ज्ञान, नित्य और सब सत्यविद्याओं के पुस्तक हैं। वेद के प्रति श्रद्धाभरे जो उद्गार महर्षि ने प्रकट किए हैं, वे देखते ही बनते हैं और एक विचारशील की दृष्टि से बड़े विचित्र प्रतिभासित होते हैं। हाँ, महर्षि की यह दृढ़ धारणा है, कि एक अध्यात्म पथ के पथिक को, सत्यविद्याओं के जिज्ञासु के लिए, सुखाभिलाषी और धर्मपथ के पथिक को सर्वात्मना वेदज्ञान को अपनाना चाहिए।

यह सब महर्षि ने केवल परिवार की परम्परा, ब्राह्मण वर्ण की कर्तव्यता तथा भारतीयता की भावना से अभिभूत होकर के नहीं स्वीकारा, अपितु वेदों को जाँचने –परखने के पश्चात् अंगीकार किया। तभी तो यह गाया गया–

वेदों का डंका आलम में बजवा दिया
ऋषि दयानन्द ने वेद के भेद नहीं खुलते

निःसन्देह आज भी एक ईश्वर के स्थान पर अनेक देवी–देवताओं, अवतारों, गुरुओं की पूजा–अर्चना चल रही है। उन सब के अपने–अपने भव्य से भव्य धर्मस्थल बने हुए हैं और बनते जा रहे हैं, पर इसके साथ ही साथ एकेश्वरवाद की सुस्पष्ट चर्चा, संगति की ओर सबका ध्यान आकर्षित हो गया है। महर्षि के प्रचार के समय तो हज़ारों ने मूर्तिपूजा से मुँह मोड़ लिया था। ऐसे ही महिला शिक्षा का अब बिना विरोध के प्रचलन आए दिन बढ़ रहा है और युवा अवस्था में विवाह की ओर समाज अग्रसर है। अब कोई विदेशयात्रा का विरोध और हौवा खड़ा नहीं करता। पहले की तरह जात–पात का अब विचार तथा व्यवहार नहीं होता और न ही घृणायुक्त छुआ–छूत का भूत किसी पर पहले की तरह सवार होता है। महर्षि के समय ये दोनों भावनायें बहुत अधिक हावी थीं।

इस प्रकार के सुधारों की सफलता का श्रेय बहुत कुछ महर्षि दयानन्द को जाता है, क्योंकि उन्होंने अपनी पूरी शक्ति के साथ अपने समय इस ओर सब का ध्यान आकर्षित किया। तभी तो भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी ने महर्षि को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा था–**"स्वामी दयानन्द की सबसे बड़ी विशेषता उनकी दूरदर्शिता थी, यह देखकर आश्चर्य होता है, कि विदेशी शासन के विरोध में सक्रिय संघर्ष के समय जिन बातों पर महात्मा गाँधी ने बल दिया और उन्हें रचनात्मक कार्य की संज्ञा दी। प्रायः वे सभी काम स्वामी दयानन्द के कार्यक्रम में 50 वर्ष पूर्व शामिल थे।**

देशभर के लिए एक सामान्य भाषा की आवश्यकता स्वामी दयानन्द ने महसूस की और हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा अथवा आर्यभाषा होने के योग्य माना है।

इसके अतिरिक्त अछूतोद्धार, स्त्रीशिक्षा, हाथ के बने कपड़े अथवा स्वदेशी का प्रयोग इत्यादि बातों पर उन्होंने काफी बल दिया और वे स्वयं भी जीवन भर इन बातों पर पूरा अमल करते थे।

उनकी कृतियों और उपदेशों से यह बात स्पष्ट हो जाती है, कि विचारों से वे राष्ट्रवादी थे और विदेशी शासन के स्थान पर स्वराज अथवा भारतीयों के ही राज्य का स्वप्न देखते थे।

समाज सेवा के क्षेत्र में स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज ने जो कार्य किया, उसके महत्त्व से इन्कार नहीं किया जा सकता। उस कार्य के लिए और देश को जो लाभ हुआ, इसके लिए हम स्वामी दयानन्द के ऋणी हैं।

यह सब महात्मा गाँधी जी ने स्वयं भी स्वीकार किया है और कहा है–**"मुझ (गाँधी) से पहले भारत में आकर स्वामी दयानन्द स्वदेशी आन्दोलन, अछूतोद्धार, समाज**

सुधार आदि क्षेत्रों में मैदान साफ न कर देते, तो मुझे इतनी शीघ्रता से सफलता मिलना कठिन था।"

बलिदान शब्द के एक अर्थ (किसी उच्च लक्ष्य के लिए जी जान से जुटना) की दृष्टि से जब हम विचार करते हैं, तो महर्षि के जीवन चरित को पढ़ने, तात्कालिक पत्रिकाओं और परिस्थितियों से स्पष्ट होता है, कि जनता को छल, धोखे, बहकावे, भुलावे से बचाने के लिए महर्षि दयानन्द ने धोखे, पाखण्ड का पर्दाफाश किया और सचाई बताई। इससे जिन लोगों ने इन धन्धों को अपनी कमाई बना रखा था, वे अपने स्वार्थ के द्वार बन्द होते देखकर विरोध करने लगे और महर्षि को नास्तिक बताकर धर्मभीरु जनता को महर्षि से दूर रहने का सन्देश देने लगे।

महर्षि को अपमानित करने का उन दिनों कौन सा ढंग नहीं बर्ता गया। गाली देना, पत्थर बरसाना, आक्रमण करना, पान आदि द्वारा विष देकर न जाने कितनी बार मारने का यत्न किया गया। और अन्त में महर्षि की मृत्यु भी एक षडयन्त्र से ही हुई, क्योंकि 29 सितम्बर 1883 से 31 अक्टूबर तक महर्षि की जो शारीरिक स्थिति रही, उससे भी स्पष्ट हो जाता है कि यह सब एक षडयन्त्र का ही परिणाम था। जैसे कि 29 सितम्बर को सोने से पहले दूध पीने के कुछ घण्टे पश्चात् ही महर्षि के पेट में असहय दर्द आरम्भ हुआ, उल्टी तथा दस्त लग गए और ये कई दिन तक लगातार चले। दवा देने पर यह सब घटा नहीं, अपितु बड़ा ही ऐसी स्थिति के लिए ही तो यह उक्ति चलती है *'ज्यों-ज्यों दवा की-मर्ज बढ़ता गया'*। महर्षि के सारे शरीर पर फफोले निकल आए। यह सारी शारीरिक स्थिति किसी विशेष प्रकार के विष के प्रभाव को ही प्रमाणित करती है। अतः यह सब एक योजनाबद्ध रूप से षडयन्त्र किया गया।

महर्षि के मृत्युकाल का यह घटनाचक्र अपने आप में एक अनूठा प्रसंग है, क्योंकि उसको देखने वाले साधारण जन ही नहीं, अपितु बड़े-बड़े डॉक्टर भी दंग थे। इतना अधिक शारीरिक कष्ट, रोग की इतनी गम्भीर स्थिति होने पर भी महर्षि ने बड़ी शान्ति और धैर्य के साथ इसे सहा तथा सहर्ष स्वयं मरण को स्वीकार किया। जिसको देख, मनीषी गुरुदत्त एम.ए. नास्तिक से आस्तिक बन कर *महर्षि के लक्ष्य को पूर्ण करने में अनवरत तत्पर हो गये।*

महर्षि की हत्या का षडयन्त्र दो ओर से किया गया। एक तो रूढ़िवादियों की ओर से हुआ, क्योंकि महर्षि द्वारा उभारे गए जन जागरण से इनकी कमाई को ठेस पहुँची। अतः अपने स्वार्थ, लोभ के कारण इन रूढ़िवादियों ने महर्षि का अनेक प्रकार से विरोध किया। केवल गालियाँ ही नहीं दी गईं, अपितु सभाओं में महर्षि पर पत्थर बरसाए, कई बार आक्रमण किए और पान मिठाई आदि द्वारा विष भी दिया गया।

इससे भी अधिक गहरा षडयन्त्र विदेशी सरकार की ओर से किया गया, क्योंकि महर्षि ने जिस प्रकार से अपने अतीत के गौरव से जहाँ भारतीय जनता में आत्मविश्वास उभारा, वहाँ एकेश्वरवाद, वेदप्रचार, महिला शिक्षा प्रसार तथा जात-पात की भावना और छुआ-छूत के घृणायुक्त व्यवहार का निवारण आदि द्वारा जनजागरण तथा संगठन किया। इससे देश को स्वाधीन कराने की हल-चल शुरू हो गई। तभी तो क्रान्तिकारियों और सत्याग्रहियों में अधिक संख्या आर्यसमाज से प्रेरितों की थी। उन दिनों के सत्ताधीशों के लिए चिन्ता की बात यह हुई, कि महर्षि ने रियासतों के राजाओं को सदाचारी बनाने और संगठित करने का प्रयास प्रारम्भ कर रखा था। जुलाई 82 से महर्षि की अन्तिम स्थिति तक का समय उदयपुर, जोधपुर आदि रियासतों में ही व्यतीत हुआ। वहाँ महर्षि ने कई-कई मास रहकर उन-उन राजाओं को नियमित रूप से जहाँ पढ़ाया। वहाँ उनको सदाचारी, संयमी जीवन जीने की विशेष प्रेरणा दी थी। हाँ, इससे पूर्व भी उन्होंने दो बार (78,81) राजस्थान की अनेक रियासतों में अपनी प्रचार-यात्रा की थी। दिल्ली दरबार (77) के समय भी महर्षि ने रियासतों के राजाओं से मिलकर विचार-विमर्श किया था।

क्योंकि स्वाधीनता के सम्बन्ध में महर्षि की यह दृढ़ धारणा थी-**"कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित, अपने और पराये को पक्षपात शून्य प्रजा पर पिता माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।** समुल्लास-8, पृष्ठ 195 (यहाँ स्वा. वेदानन्दतीर्थ सम्पादित स्थूलाक्षर की पृष्ठसंख्या है) महर्षि ने पराधीनता के कारणों और परिणाम का निर्देश करते हुए लिखा है-**"अब अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर के विरोध से अन्य देशों के राज्य करने की कथा ही क्या कहना किन्तु आर्यावर्त्त में भी आर्यों का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ भी है सो भी विदेशियों के पादाक्रान्त हो रहा है। कुछ थोड़े राजा स्वतन्त्र हैं। दुर्दिन जब आता है, तब देशवासियों को अनेक प्रकार से दुःख भोगना पड़ता है।"** (स.प्र. समु. 8,195)

सत्यार्थ प्रकाश के इन दोनों उद्धरणों से स्पष्ट होता है, कि महर्षि के हृदय में भारत की स्वाधीनता के लिए कितनी तीव्र भावना थी। भारत की स्वाधीनता को महर्षि सभी आशाओं समृद्धियों का आधार मानते थे। अतः एतदर्थ भारतीयों को तैयार करने का महर्षि ने हर संभव प्रयास किया। इसके लिए अतीत के गौरव के आधार पर जहाँ भारतीयों में आत्मविश्वास उभारा, वहाँ भारतीयों को संगठित करने का यथाशक्ति प्रयास किया।

संगठन के लिए जो-जो सहायक बातें हैं, उनकी ओर जहाँ सबका ध्यान आकर्षित किया। जैसे कि - 'चारों वर्णों को परस्पर प्रीति, उपकार, सज्जनता, सुख, दुःख, हानि, लाभ में ऐकमत्य रहकर राज्य और प्रजा की उन्नति में तन, मन, धन, का व्यय करते रहना।' (स.प्र. समु. 4,100) वहाँ संगठन का फूट में बदलने वाली जो भी कोई बात जहाँ भी दिखाई दी, उसकी तीखी आलोचना की और उसको शीघ्र से शीघ्र छोड़ने पर बल दिया। इसीलिए जात-पात के आधार पर होने वाले ईर्ष्या-घृणायुक्त भेदभाव, छुआ-छूत और विदेश गमन के कारण होने वाले जाति बहिष्कार की ओर सबका ध्यान आकर्षित किया, क्योंकि ये सारी बातें उन दिनों आपस की फूट का कारण बनी हुई थीं। तभी तो महर्षि ने लिखा है-'(पूर्वपक्ष) आर्यावर्त्त देशवासियों का आर्यावर्त्त देश से भिन्न-भिन्न देशों में जाने से आचार नष्ट हो जाता है वा नहीं? (उत्तरपक्ष) यह बात मिथ्या है, क्योंकि जो बाहर भीतर की पवित्रता करनी, सत्यभाषणादि आचरण करना है वह जहाँ कहीं करेगा आचार और धर्मभ्रष्ट कभी न होगा और जो आर्यावर्त्त में रहकर भी दुष्टाचार करेगा वही अधर्म और आचारभ्रष्ट कहावेगा।' (स.प्र. समु. 10,225)

'और जो आजकल छुतछात और धर्म नष्ट होने की शंका है वह केवल मूर्खों के बहकाने और अज्ञान बढ़ने से है। जो मनुष्य देश देशान्तर और द्वीप द्वीपान्तर में जाने आने में शंका नहीं करते वे देश देशान्तर के अनेक विध मनुष्यों के समागम, रीति-भांति देखने, अपना राज्य और व्यवहार बढ़ाने से निर्भय शूरवीर होने लगते और अच्छे व्यवहार का ग्रहण कर बूरी बातों को छोड़ने में तत्पर होकर बड़े ऐश्वर्य को प्राप्त होते हैं।' (स.प्र. समु. 10,226)

'देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर जाने में कुछ भी दोष नहीं लग सकता।' (स.प्र. समु.10,227)

'आपस में आर्यों का एक भोजन होने में कोई दोष नहीं दिखता। जब तक एकमत, एक हानि-लाभ, एक सुख-दुःख परस्पर न मानें तब तक उन्नति होना बहुत कठिन है। परन्तु केवल खाना पीना ही एक होने से सुधार नहीं हो सकता। किन्तु जब तक बुरी बातें नहीं छोड़ते और अच्छी बातें नहीं करते तब तक बढ़ती के बदले हानि होती है।' (स.प्र. समु. 228)

महर्षि दयानन्द की दृष्टि से जात-पात, छुआ-छात, विदेशगमन पर होने वाले बहिष्कार आदि के कारण भारतीयों में फूट बढ़ी है और इसी फूट के कारण ही भारत की हर प्रकार से अवनति हुई है। भारतीयों की फूट के प्रति बड़े दुखी हृदय से महर्षि लिखते हैं-'विदेशियों के आर्यावर्त्त में राज्य होने के कारण आपस की फूट, मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, विद्या न पढ़ना पढ़ाना वा बाल्यावस्था में अस्वयंवर विवाह, विषयासक्ति, मिथ्याभाषण आदि कुलक्षण, वेदविद्या का अप्रचार आदि कुकर्म है। जब आपस में भाई भाई लड़ते हैं तभी तीसरा विदेशी आकर पञ्च बन बैठता है। क्या तुम लोग महाभारत की बातें जो पाँच सहस्र वर्ष के पहले हुई थीं उनको भी भूल गए? देखो महाभारत युद्ध में सब लोग लड़ाई में सवारियों पर खाते-पीते थे। आपस की फूट से कौरव पाण्डव और यादवों का सत्यानाश हो गया सो हो गया, परन्तु अब तक भी वही रोग पीछे लगा है। न जाने यह भयकर राक्षस कभी छूटेगा वा आर्यों को सब सुखों से छुड़ाकर दुःखसागर में डुबा मारेगा? उसी दुष्ट दुर्योधन गोत्रहत्यारे, स्वदेशविनाशक, नीच के दुष्ट मार्ग में आर्य लोग अब तक भी चल कर दुःख बढ़ा रहे हैं। परमेश्वर कृपा करे कि यह राजरोग हम आर्यों में से नष्ट हो जाय। (स. प्र. पृ. 228-9)

इन उद्धरणों का एक-एक शब्द इसका साक्षी है, कि महर्षि दयानन्द भारत की तात्कालिक स्थिति से बहुत अधिक खिन्न थे और वे जन-जन के विचारों को सही रूप देकर एक सुन्दर, सुखद रूप, सुधार सामने लाना चाहते थे। महर्षि के विचारों, कार्य-कलापों को पूरी तरह से समझने के लिए महर्षि के जीवन पर एक दृष्टिपात कर लेना अपेक्षित हो जाता है।

182 शालीमार नगर, होशियारपुर, पंजाब

☞ *पृष्ठ 07 का शेष*

उपनिषदों में ...

मेघगर्जन उसका हिलना है। वर्षा मूत्रोत्सर्ग है तथा वाणी उसका हिनहिनाना है।

मानव जाति के लिए इस रहस्य को समझना नितान्त आवश्यक हो गया है, क्योंकि यह यजन निरंतर चलने वाली जीवनी शक्ति का अंग है। इसमें प्रमाद का परिणाम हमारे समक्ष है। श्रमिक से लेकर दार्शनिक और वैज्ञानिक तक पर्यावरण असन्तुलन के प्रति चिंतित तो है, किंतु सहज चेतन नहीं हैं। जब व्यक्तिगत स्तर पर कष्ट होता है, तो सामान्य जन दूसरों पर दोषारोपण कर देता है, किंतु हम स्वयं क्या कर रहे हैं? यह नहीं सोचता। इसके लिए औपनिषद महावाक्य बड़ी व्यावहारिक व्यवस्था प्रदान करते हैं। **'अहं ब्रह्मास्मि'** की अनुभूति 'अयमात्मा ब्रह्म' का बोध तथा 'तत्त्वमसि' को दृढ़ उपदेश ही **'प्रज्ञानं ब्रह्म'** का चरम स्तर है। प्रज्ञान वह सीमा है, जहाँ अस्मद्, युष्मत, तत् तथा इदं का भेद नहीं रहता। वहाँ, जो व्यष्टि के लिए है, वही समष्टि के लिए।

निश्चित रूप से यदि सभी व्यक्ति जड़ तथा चेतन पशु पक्षी वृक्ष-वनस्पति स्थावर जङ्गम सर्वस्व को आत्मभाव से देखेंगे, तो सहानुभूति होगी। सहभाव की अनुभूति सहृदयता तथा कर्तव्य निष्ठा को उत्पन्न करेगी। स्वस्थ तथा शाश्वत पर्यावरण चेतना का उदय होगा तथा संरक्षण का आदान-प्रदान मानव और प्रकृति के मध्य अनन्तकाल तक चलता रहेगा।

के. 680, आशियाना, कानपुर रोड, लखनऊ

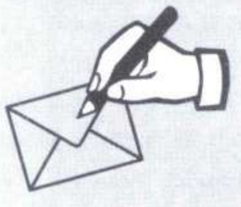

पत्र/कविता

सांस्कृतिक स्वतंत्रता की आहट...

मथुरा में जब प्रधानमंत्री ने अपने ओजस्वी सम्बोधन में भारतीय संस्कृति के आधार स्तंभों के 'ओ३म्' और 'गाय' को जोड़ा तो हृदय भाव विभोर हो उठा। उन्होंने व्यंग्य करते हुए कहा कि 'ओ३म्' शब्द सुनते ही कुछ लोगों के कान खड़े हो जाते हैं, कुछ लोगों के कान में 'गाय' शब्द पड़ता है तो उनके बाल खड़े हो जाते हैं। ऐसे लोगों ने देश को बर्बाद कर रखा है। सत्य है कि राष्ट्र के सांस्कृतिक मूल्यों को स्थापित करना या उसके लिए प्रयास करना भी राष्ट्रीय नेतृत्व का एक मुख्य दायित्व बनता है।

दशकों से देश में 'हिन्दू मन की बात करना' या 'हिन्दुओं के हित में कार्य करने' को साम्प्रदायिक व संकीर्ण बुद्धि वाला बता कर उपहास उड़ाया जाता रहा है। विदेशी धन के बल पर समाज सेवा के नाम पर गठित हजारों स्वयं सेवी संगठनों ने अपने कुप्रयासों से भारतीयता को दूषित करने के लिए हर संभव कार्य किये। भारतीय संस्कृति की रक्षार्थ ऐसे संस्थानों से निबटना एक जटिल परंतु अति महत्वपूर्ण कार्य था।

आज हमारा यह भी सौभाग्य है कि गृह मंत्री ने 'हिंदी दिवस' पर अपने मन की बात कह कर सबके मनों को जीत लिया। भारत की संस्कृति का मूल आधार हिंदी भाषा को अपना कर सम्पूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में पिरो कर राष्ट्रीय पहचान को विकसित करने का प्रयास होना ही चाहिये।

वर्तमान राष्ट्रवादी शासन द्वारा हिन्दुओं में अहिंसा व उदारता के साथ साथ वीरता और तेजस्विता का भाव उनमें स्वाभिमान जगा रहा है। देश-विदेश में भारतीय संस्कृति की रक्षार्थ सतत् संघर्ष करने वाले करोड़ों हिन्दुओं का मनोबल बढ़ने से उनका सम्मान भी बढ़ा है।

विनोद कुमार सर्वोदय
गाजियाबाद
guptavinod038@gmail.com

****

स्वस्ति वाचन का पद्यानुवाद

(मंत्र 9 से 14)

जिन विद्वानों के हित, प्रकाशक, अक्षर जगमाता।
मधुर दूध-समान हैं, अमर वेद-ज्ञान का दाता।।
बलशाली, पोषक, सुकर्मी, दानशीलता मेघ-समान।
उन आदित्य विद्वानों को, हम सुखार्थ हर्ष करें प्रदान।।

आदरणीय, सावधान, नरचेता, जो हैं ज्ञानी, विद्वान्।
ईश्वर से पाते हैं वे, अमरत्व का दिव्य वरदान।।
ज्ञान-मार्ग के निष्पाम पथिक, जो हैं सदा ज्ञान में व्याप्त।
वे परमदेव के परमधाम-मोक्ष को करते हैं प्राप्त।।

तेजस्वी, ज्ञानवृद्ध विद्वान्, करते यज्ञ-कर्म को प्राप्त।
अपीड़ित, सरल, जो ज्ञानी जन, मोक्ष-धाम में होते व्याप्त।।
उन आदित्य पुरुषों को, देकर यथा योग्य
अन्नादि, मधुरवाणी से सेवा कर हम पाएँ कल्याण।।

तेरे वेद-ज्ञान की सिद्धि, करता सुखरुप विधाता है।
मनस्वी विद्वानों! तेरी उपासना का वही फल-दाता है।।
तेरे अनेक जन्मों के अहिंसक यज्ञ की करता सिद्धि।
वही दुखहर्त्ता बन, कल्याण हेतु, करता सुख-वृद्धि।।

समिद्धवत् ज्ञान-दीप्त, मननशील, ईश्वर के स्रोता।
अपनाते श्रेष्ठ वेद-ज्ञान को जिनसे, वे हैं सप्त-होता।।
वे सूर्यवत् तेजस्वी जन, हमें अभय सुख प्रदान करे।
हमारे कल्याण के हेतु, सुगम, सु-पथ का निर्माण करे।।

चराचर के जो ज्ञानी, ऋषिगण, मननशील विद्वान्।
वे कृत-अकृत पापों से बचा, करें हमारा कल्याण।।

सूर्यदेव चौधरी
मो. 9470587322

पर्वों की शान दीवाली

बच्चों की किलकारी, किशोरों की फुलवारी
बड़ों की भाग दौड़, बुजुर्गों की जिम्मेदारी
घरों की साफ सफाई, व्यजनों की गंध प्यारी
पटाखों की धड़ाम-धू, रोशनी की खुमारी
पर्वों की शान दीवाली
खुशियों की खान दीवाली
अधरों की मुस्कान दीवाली।
लक्ष्मी जग की धूरी है, इसका लीला निराली
ईर्ष्यालु भले कहे, इसको कमाई काली
लक्ष्मी गर आए तो, छप्पर फाड़ के आए
और लक्ष्मी जाए तो, सब कुछ झाड़ के जाए
लक्ष्मी का रूप दीवाली
तमस की धूप दीवाली
ओहदः की भूप दीवाली।
त्योहार देते प्रेरणा, मिल जुल कर साथ रहे
सद्भाव से जीवन, खिलता और फलता रहे
मनुहारों का प्रकाश, मन में उजियारा करे
संस्कारों का कारवाँ, चलता रहे चलता रहे
शिष्टता का उपदेश दीवाली
एकता का संदेश दीवाली
स्वच्छता का परिवेश दीवाली।
शुभ-लाभ, ऋद्धि-सिद्धि की, इतनी सी कथा कहानी
जीओ जीवन में उद्यम कौशलता बुद्धिमानी
बिन भाषण के दिलचस्प, अच्छे दिन आ जाएँगे
मेहनत का फल मीठा, यह है कबीर की वाणी
संस्कृति की शिक्षा दीवाली
दायित्व की दीक्षा दीवाली
परिश्रम की परीक्षा दीवाली

दिलचस्प
चूरू-331001
मो. 9413052122

ऋषि दयानन्द के मार्ग पर चलने का संकल्प लें

आर्य समाज के संस्थापक, समाज सुधारक, देश प्रेमी, भारतीय संस्कृति के रक्षक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के निर्वाण दिवस पर महर्षि के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए दीपावली के शुभपर्व पर बहुत बहुत बधाई एवं शुभकामनायें। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य जनों के अतिरिक्त सम्पूर्ण जगत् को सामाजिक बुराईयों से दूर रहने का सन्देश दिया था। महर्षि ने जात-पात, छूआछूत, अन्धविश्वास, जादू टोने व तांत्रिक विद्या के भय से दूर होकर सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ से सीख लेने पर बल दिया जो कि सम्पूर्ण जगत् की सुख शांति, खुशहाली के लिए अति महत्त्वपूर्ण है।

दीपावली पर्व ज्ञान के प्रकाश से समूचे जगत् में सुखशांति, खुशहाली की रोशनी लाकर बुराईयों से फैले अन्धकार को दूर करे और हम सब महर्षि दयानन्द सरस्वती के मार्ग पर चलने का संकल्प लें।

देशबन्धु
आर.जैड 127 संतोष पार्क
उत्तम नगर, नई दिल्ली-59

****

हिन्दी पुत्री पाठशाला खन्ना ने मनाया 71वाँ स्थापना दिवस

हिन्दी पुत्री पाठशाला सी. सै. खन्ना में का 70वाँ स्थापना दिवस बड़ी धूमधाम ओर हर्षोल्लास से मनाया गया। इस आयोजन के मुख्यातिथि श्री स. सुच्चा सिंह जी गरचा (NRI) थे। इस अवसर पर एक विशेष एक विशेष यज्ञ का सम्पन्न किया गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ ज्योति प्रज्ज्वलन से हुआ। संस्था की मैनेजर श्रीमती सरोज कुन्दरा जी ने अपने भाषण में संस्था के 70 वर्ष पूरे होने पर सभी को बधाई दी तथा कहा कि हिन्दी पुत्री पाठशाला सी. सै. खन्ना ने अपने 70 वर्षों का सफर राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उपलब्धियों हासिल करते हुए तय कर लिया है। मुख्यातिथि स. सुच्चा सिंह जी गरचा के व्यक्तित्व के बारे में प्रकाश डालते हुए कहा कि वह सादगी की जीती जागती तस्वीर हैं। उनकी शालीनता, दानवीरता तथा शांत स्वभाव अनुकरणीय हैं। इसके पश्चात् छात्र छात्राओं द्वारा स्थापना दिसव से संबंधित सांस्कृतिक प्रस्तुत किया गया।

चेयरमैन श्री कुलभूषण राय जी सोफत ने इस शुभदिन की बधाई देते हुए श्रीमती सरोज कुन्दरा की सेवाओं और उपलब्धियों पर प्रकाश डाला।

प्रि. श्रीमती रजनी वर्मा जी ने उपस्थित जनों को हिन्दी पुत्री पाठशला सी. सै. खन्ना स्थापना दिवस के महत्त्व को बताते हुए शुभकामनाएँ दी।

अंत में शांतिपाठ से आयोजन संपन्न हुआ।

नन्हे बच्चों ने किया सम्पूर्ण रामायण का मंचन

डी.ए.वी. स्कूल पश्चिमी पटेल नगर में सम्पूर्ण रामायण का मंचन पाठशाला के प्रांगण में नन्हें नन्हें बच्चों ने बड़े हर्षोल्लास से मनाया।

नन्हे बच्चों ने रामायण के पात्रो के संवाद तथा उनके हाव–भाव का बड़ी सरलता एंव आत्मविश्वास के साथ निभाये। कक्षा एल.के. जीत्र ने बालकांड के दृश्य दिखाकर दर्शकों का मन मोह लिया। यू.के.जी. के बच्चों ने अयोध्या कांड के मुख्य दृश्य नाटकीय रूप में प्रस्तुत किए। अरण्य कांड तथा किष्किन्धा कांड के दृश्य कक्षा प्रथम ने दिखाए। सुंदर कांड, लंका कांड तथा उत्तर कांड के मुख्य दृश्य कक्षा दूसरी के बच्चों ने बड़े सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किए।

सब बच्चे, राम, सीता, लक्षमण, की वेशभूषा में सुसज्जित थे, बहुत ही सुंदर लग रहे थे। कुछ बच्चों ने रामायण की चौपाइयाँ मधुर तान के साथ स्टेज पर गाईं। वातावरण धार्मिक शुद्ध एवं पवित्र हो गया था।

इस अवसर पर अभिभावकों को अपने बच्चों का अभिनय देखने हेतु आमंत्रित किया गया था। इतने नन्हें बच्चों द्वारा रामायण के पात्रों का अभिनय देखने के लिए अभिभावक अत्यन्त उत्साहित एवं प्रसन्न दिख रहे थे। कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने हेतु हमारे बीच पाठशाला के चेयरमैन श्री अजय सूरी जी, मैनेजर मैडम श्रीमती शशी प्रभा चांदला जी तथा अन्य डी.ए.वी. विद्यालयों के प्रिंसीपल आमंत्रित थे। प्रधानाचार्या मैडम रश्मि गुप्ता ने मुख्य अतिथियों का स्वागत किया तथा कार्यक्रम का शुभ आरम्भ दीप प्रज्वलित करके गायत्री गान के साथ किया।

अभिभावको ने प्रिसीपल मैडम द्वारा आयोजित कार्यक्रम को बहुत सराहा तथा खूब तालियाँ बजाई। नन्हें बच्चों द्वारा रामायण की प्रस्तुति अद्‌भुत एवं सहारानीय थी।

ग्लोबल टीचर्स कॉन्क्लेव में जसोला विहार की शिक्षिकायें सम्मानित

ए.के.एस द्वारा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ग्लोबल टीचर्स कॉन्क्लेव अवॉर्ड सेरेमनी का आयोजन किया गया।

इस अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में 72 देशों के प्रतिभागियों ने भाग लिया और विभिन्न देशों से 500 विजेताओं का चयन हुआ। शिक्षा के क्षेत्र में बेहतरीन प्रदर्शन के लिए हिंदी विषय की शिक्षिका श्रीमती सरोज और विज्ञान विषय की शिक्षिका श्रीमती राजेश मेहता को सम्मानित किया गया।

इस प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल–निर्देशक सर्वेश जगदीशराज, श्री महेश कामरा और सी.ई.ओ. दिनेश कामरा तथा तुर्की के राजदूत थे। पुरस्कार के रूप में श्रीमती सरोज और श्रीमती राजेश मेहता को एक–एक प्रशस्ति पत्र और एक–एक ट्रॉफी प्रदान की गई।

विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. वी.के. बड़थ्वाल जी ने दोनों शिक्षिकाओं को इस अंतराष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार द्वारा सम्मानित किए जाने पर बधाई दी और इनके बेहतरीन प्रदर्शन की सराहना करते हुए उन्हें भविष्य के लिए शुभकामनाएँ दीं।

डी.ए.वी. समाना में बनाया जाएगा आधुनिक स्टेडियम

डी.ए.वी. समाना के प्रधानाचार्य डॉ. मोहनलाल शर्मा से प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार बच्चों के सर्व पक्षीय विकास को ध्यान में रखते हुए लगभग 5 करोड़ की लागत आधुनिक स्टेडियम का निर्माण किया जाएगा। इस स्टेडियम के निर्माण के लिए स्कूल के साथ लगती 3 एकड़ जमीन खरीदी गई है। इसके निर्माण करने का मुख्य उद्देश्य स्कूली बच्चों को खेल संबंधी सभी सुविधाएँ देने के साथ–साथ सी.बी.एस. ई बोर्ड द्वारा स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा को प्राथमिकता देना है। इस स्टेडियम के निर्माण का श्रेय डी.ए.वी प्रबंधक कमेटी नई दिल्ली के परामर्श दाता तथा स्कूल के चेयरमैन श्री एच. आर. गंधार को जाता है।

यह स्टेडियम बहु–उद्देशीय सुविधाओं से संपन्न होगा जिसमें एन.आई.एस पटियाला के निर्देशानुसार लगभग 25 प्रकार की खेलें खेलने की व्यवस्था होगी तथा इन खेलों के लिए एन.आई.एस पटियाला से आए प्रशिक्षकों (कोच) को नियुक्त किया जाएगा। इनकी देख–रेख में बच्चे भिन्न–भिन्न खेलों का अभ्यास करेंगे।

इन खेलों में मुख्य हैं– तीरंदाजी, शूटिंग, बॉक्सिंग, क्रिकेट, जिमनास्टिक, हॉकी, हैंडबाल, कबड्डी, तैराकी, कुश्ती, शतरंज, योगा, बास्केटबॉल, बैडमिंटन, फुटबॉल, जूडो–कराटे, खो–खो, रोलर–स्केटिंग, टेबल–टेनिस, वॉलीबॉल, वुशू। एथलेटिक्स के लिए 400 मीटर का सिंथेटिक ट्रैक बनवाया जाएगा।

समाना व शुतराणा सब–डिवीजन के लगभग 200 गाँवों के बच्चों को इस स्टेडियम से भरपूर फायदा मिलने वाला है खेलने का यह स्थान अंतरर्राष्ट्रीय संरचना पर आधारित होगा, जिसमें दर्शकों के लिए बैठने की उचित सुविधा का उचित प्रबंध भी किया जाएगा।

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2018-20
Posted at N.D.P.S.O. ON 23/24-10-2019

आनन्द आरोग्य मन्दिर ने लगाया निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर

आर्य समाज (अनारकली) में 'आनन्द आरोग्य मन्दिर' नामक प्राथमिक चिकित्सा के केन्द्र की ओर से 11वाँ निशुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर सफलता पूर्वक आयोजित किया गया।

इस कैम्प में डॉ. रमेश आर्य, उपप्रधान, डी.ए.वी. प्रबन्धक समिति, के योग्य मार्ग दर्शन में डॉ. हरिवंश कुमार अरोडा, डॉ. वोबिन सलूजा, डॉ. नीना भसीन, डॉ. अशु असरी, डॉ. एम.एल. गुप्ता, डॉ. राहुल कौशिक, डॉ. ऋचा दीवान बहुत प्रेम व श्रद्धा से सभी मरीजों का निरीक्षण किया व उन्हें दो दिन की दवाईयाँ मुफ्त उपलब्ध करवाईं।

सभी मरीजों को उपहार स्वरूप डाबर शहद की बोतलें भेंट की गई। श्रीमान प्रबोध महाजन जी की सहायता से च्यवनप्राश की बोतलें प्राप्त हुई थीं।

डी.ए.वी. प्रबन्धकृत्री समिति व आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान, आर्य रत्न डॉ. पूनम सूरी अपनी पत्नी श्रीमती मणि सूरी व पौत्र आनन्द के साथ निशुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर में पधारे। उन्होंने प्रत्येक कमरे में कार्यरत डॉक्टरों व मरीजों से हालचाल पूछा और सभी गतिविधियों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उन्होंने आगामी होने वाले शिविरों की लिए रचनात्मक सुझाव ब्रिग्रेडियर ए.के. अदलखा, कार्यकारी प्रधान श्रीमान अजय सूरी, डॉ. रमेश आर्य को दिये।

भविष्य में भी पिछडे हुए जनमानस के लिए करने का दृढ़ संकल्प, आनन्द आरोग्य मन्दिर के सभी डॉक्टरों व पदाधिकारियों ने इस प्रकार के सफल निशुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविरों का आयोजन करने का संकल्प दोहराया। अंत में मंत्री बि. ए.के. अदलखा ने सभी डॉक्टरों, श्रीमती स्नेह मोहन (सहमंत्री), कु जसप्रीत, श्रीमान मोहत कपूर व डी.ए.वी. के अनेक कार्यकत्ताओं का हृदय से धन्यवाद किया।

शिविर में लगभग 250 मरीजों को देखा गया, सभी मरीज डॉक्टरी जाँच से बहुत प्रसन्न नज़र आये तथा भविष्य में ऐसे होने वाले आयोजनों के बारे में काफी उत्साहित नज़र आये।

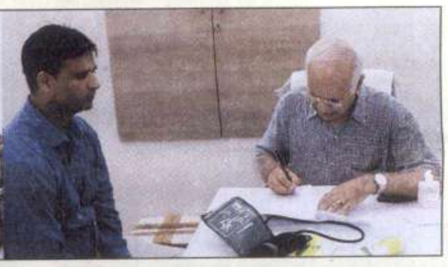

डी.एल.डी.ए.वी. शालीमार बाग में वनमहोत्सव

डी.एल.डी.ए.वी. मॉडल स्कूल, शालीमार बाग ने दिल्ली के टाटा पॉवर संगठन के साथ मिलकर वनमहोत्सव बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया। इस अभियान के अंतर्गत विद्यालय परिसर व उसके आसपास 200 पौधे लगाए गए।

विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती रीना राजपाल ने सबको संबोधित करते हुए कहा कि पर्यावरण संरक्षण आज अन्तर्राष्ट्रीय सरोकार है। वन संरक्षण तथा पौधारोपण इस लक्ष्य को प्राप्त करने का सशक्त साधन है। इसीलिए संयुक्त राष्ट्र ने 'जलवायु परिवर्तन और उसके प्रभावों से निबटने के लिए तत्काल कार्यवाही करना' अपने इस लक्ष्य के अन्तर्गत वन संर्वधन पर ज़ोर दिया है। पर्यावरण संरक्षण करने के लिए किया। उन्होंने कहा कि प्रत्येक छात्र, अध्यापक व अन्य सहकर्मी अपने-अपने घर पर एक पौधा लगाए और सच्ची निष्ठा से उसकी देखभाल करते हुए इस राष्ट्रीय यज्ञ में भाग लें। साथ ही साथ उन्होंने पर्यावरण संरक्षण के अनेक बिंदुओं जैसे – जल संरक्षण, ऊर्जा संरक्षण, आदि पर भी बल दिया।

सभी विद्यार्थियों ने यह संकल्प लिया कि वे अपने द्वारा लगाए पौधे को समय पर पानी देंगे व उनकी देखभाल करेंगे।

स्कूल के इको क्लब ने जन-जन में चेतना लाने व पर्यावरण का अलख जगाने के लिए अनेक गतिविधियों का आयोजन किया। जैसे – 'पर्यावरण संरक्षित तो जीवन सुरक्षित' रैली, नुक्कड़ नाटक, काव्य पाठ, परिचर्चा, आदि।

जी.एम.आर. वरलक्ष्मी डी.ए.वी. राजम में गांधी जयन्ती पर कार्यक्रम

जी.एम.आर.वी. डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, राजम (आंध्र प्रदेश) में श्रीमान् प्रधानाचार्य के.वी. आर.के. प्रसाद की अध्यक्षता में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी के 150 जन्मोत्सव का साप्ताहिक समारोह धूम-धाम से मनाया गया।

इस सप्ताह में छात्रों द्वारा गाँधी जी के चित्र का कोलाज बनाना, गांधी जी से संबंधित बालगीत और कविता वाचन, नारे प्रस्तुतीकरण, भाषण और गांधी जी के संस्मरण करना तथा 'स्वच्छ भारत' पर स्वच्छंद कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। अन्तिम दिन छात्रों द्वारा मधुर गीत, नैतिक मूल्यों पर रंग मंचन, गांधी जी के ईश्वर भक्ति का मूक अभिनयन, नृत्य प्रदर्शन किए गए। इसके साथ-साथ दशहरा उत्सव से संबधित कए आकर्षकीय नृत्य प्रदर्शन किया गया।

अंत में श्री के.वि.आर.के. प्रसाद जी ने गांधी जी के सत्य और अहिंसा के सिद्धातों को अपनाने की सलाह देते हुए कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी छात्रों की प्रशंसा की।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू-30, ओखला, फेस-II, नई दिल्ली-110020 (दूरभाष : 26388830-32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.-9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**